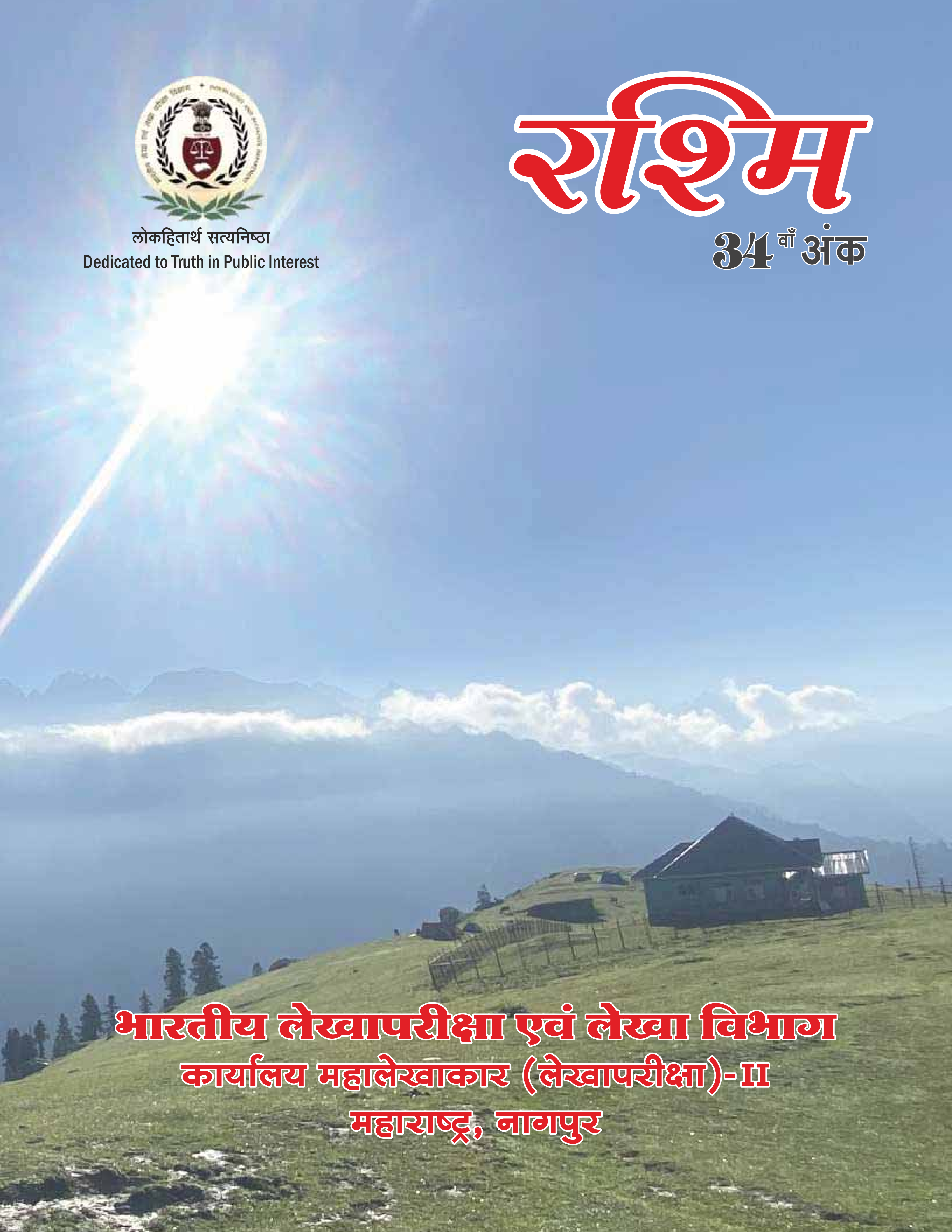

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

रश्मि

34 वाँ अंक

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II
महाराष्ट्र, नागपुर

मुख पृष्ठ का परिचय

मुख्य पृष्ठ का छायाचित्र, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के गांदरबल शहर के पास 11,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित कंगन नामक स्थान का है, जिसे इस कार्यालय में पदस्थ सुश्री आस्था गर्ग, वरिष्ठ लेखापरीक्षक द्वारा उनकी ट्रैकिंग के दौरान सुबह लगभग 07.30 बजे कैमरे में कैद किया गया था।

संरक्षक की कलम से...

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका ''रश्मि'' के 34 वें ई-अंक का प्रकाशन हर्ष का विषय है । ''रश्मि'' पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु किया गया यह प्रयास सराहनीय है। यह पत्रिका कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभा का दर्पण है। मुझे विश्वास है कि ''रश्मि'' के माध्यम से कार्यालय के स्टाफ को राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कामकाज करने और राजभाषा से जुड़ने की प्रेरणा मिलेगी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर द्वारा वर्ष 2020-21 में कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका ''रश्मि'' को तृतीय पुरस्कार प्राप्त होने के अवसर पर मैं कार्यालय के समस्त राजभाषा प्रेमियों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ तथा संपादक मंडल एवं रचनाकारों के अथक प्रयास की सराहना करते हुए सभी को पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए बधाइ देता हूँ।

आर. तिरुपति वेंकटसामी
महालेखाकार

रश्मि परिवार

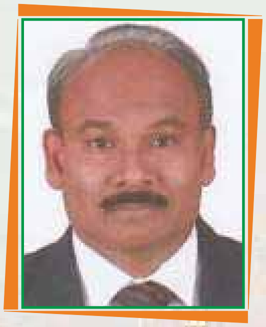

संरक्षक
श्री आर. तिरुपति वेंकटसामी
महालेखाकार

मार्गदर्शक
श्रीमती पल्लवी पी. होळकर
वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन)
एवं राजभाषा अधिकारी

✦ **समीक्षा समिति**

श्री आर. के. शर्मा, स.ले.प.अ.

श्री विपिन वर्मा, स.ले.प.अ.

✦ **संपादक**

श्री वसीम मिन्हास
हिंदी अधिकारी

✦ **संपादन सहयोग**

श्री राजेश कुमार कटरे, वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री नीलम देवी, कनिष्ठ अनुवादक

गतांक से आगे ...

अस्वीकरण : पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, उनसे कार्यालय / संपादक मंडल अथवा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। उससे उत्पन्न किसी भी वाद की जिम्मेदारी रश्मि परिवार अस्वीकार करता है।

मार्गदर्शक की अभिव्यक्ति ...

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका ''रश्मि'' अनवरत अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अग्रसर है। विगत अंकों की भाँति पत्रिका के इस 34 वें ई-अंक में भी ज्ञान और अनुभव के संचरण के साथ-साथ कार्यालय के कार्मिकों को अपने सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का सुअवसर देने का प्रयास सराहनीय है ।

विभिन्न भाषायी क्षेत्रों के पाठकों की हिंदी पढ़ने एवं लिखने की रुचि को जागृत करने में कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिकाओं का अतुलनीय योगदान होता है। कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्य में निरंतर वृद्धि होना इस बात का प्रमाण है कि हिंदी गृह पत्रिका ''रश्मि'' राजभाषा हिंदी के प्रचार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। पत्रिका के प्रत्येक नए अंक का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति पाठकों की सोच, समझ और ज्ञान को विकसित करता है। मैं आशा करती हूँ कि हिंदी गृह पत्रिका ''रश्मि'' का 34 वां ई-अंक भी विगत अंकों की भाँति ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर साबित होगा ।

इसी विश्वास के साथ मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित संपादक मण्डल एवं सभी रचनाकारों को बधाई देती हूँ तथा इसकी प्रगति की कामना करती हूँ।

पल्लवी पी. होळकर
राजभाषा अधिकारी एवं
वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन)

संपादकीय ...

राजभाषा हिंदी को समर्पित कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका ''रश्मि'' के 34 वें ई-अंक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हिंदी न केवल संघ सरकार की राजभाषा है बल्कि हिंदी भाषा में भारतीय संस्कृति के विभिन्न तत्वों को आत्मसात करने की अद्‌भुत शक्ति है। कार्यालयों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हिंदी गृह पत्रिकाएँ कार्मिकों में रचनात्मक प्रतिभा को उभारने तथा उनमें राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ''रश्मि'' के 34 वें ई-अंक में भी विगत अंकों की भाँति, कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने विविध विषयों पर अपने ज्ञान एवं अनुभवों को सृजनात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है जिसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं।

रश्मि के विगत कुछ अंकों को विभिन्न मंचों पर सराहना मिली है । हमारी इस उपलब्धि का श्रेय महालेखाकार, राजभाषा अधिकारी, सभी रचनाकारों, पाठकों, समीक्षा समिति के सदस्यों तथा उन सभी सहयोगियों को जाता है जिन्होंने पत्रिका की गुणवत्ता को बनाए रखने में अपना अमूल्य सहयोग दिया है।

मैं हिंदी गृह पत्रिका ''रश्मि'' के 34 वें ई-अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ। साथ ही मैं महालेखाकार महोदय तथा राजभाषा अधिकारी/वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन) को उनके बहुमूल्य मार्गदर्शन तथा प्रेरणा हेतु धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

वसीम मिन्हास
हिंदी अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना / कविता	पृष्ठ क्र.
1.	सेवा निवृत्ति संदेश श्री आर. के. मंथापुरवार	1
2.	उम्मीद श्रीमती अर्चना राज चौबे	3
3.	कोसली भाषा के प्रसिद्ध कविः पद्मश्री हलधर नाग श्री दिलीप कुमार परिडा	4
4.	सफलता का बीजमंत्र श्री राजीव रंजन	5
5.	नारी सुश्री नीलम देवी	5
6.	हैप्पी फादर्स डे, माँ ! सुश्री वंदना	6
7.	पर वो दिल का तो बुरा नहीं है! श्रीमती कंचन	8
8.	आज़ादी का अमृत महोत्सव सुश्री सेजल भोपसे	10
9.	री ज़िन्दगी, तू थोड़ी तो आसान होती श्री वाई. के. दीपक	11
10.	काए की जरुरत श्रीमती प्रीति	11
11.	जीवन का अर्थ जीवन को एक अर्थ देना है ... सुश्री श्वेता शर्मा	12
12.	संकल्प आजादी की रक्षा का श्री राजेश कुमार कटरे	14
13.	पुस्तकों की अद्भुत दुनिया श्री वसीम मिन्हास	15
14.	हकीकत श्रीमती सुनीता भोपसे	16
15.	आमची मुंबई श्री गिर्राज प्रसाद मीना	17
16.	तकनीकी श्री मिथिलेश कुमार साह	18
17.	वसीयत/बँटवारा श्री के. के. पाण्डेय	19
18.	प्लास्टिक की दुनिया श्रीमती प्रियंका कुमारी	19
19.	हिन्दी भाषा वर्ग-पहेली श्रीमती नीरजा टंडन	20
20.	आज़ादी के 75 साल का हाल श्रीमती किरन देवी	21
21.	लॉक डॉउन श्री रवि प्रिंस	21
22.	गुरुवर की यादें श्री अभिलेख कुमार निराला	22
23.	75 वर्ष बाद ... श्री किशन चतुर्वेदी	24
24.	पिता श्री पी. जे. तुरबाडकर	24
25.	मन के हारे हार हैं - मन के जीते जीत सुश्री सोनिका सोनी	25
26.	कर्मों का फल श्री अनिल कुमार	26
27.	सफल बनने के लिए स्वस्थ रहें ... सुश्री मोनिका सोनी	27
28.	सर्दी आई सुश्री चित्राली कटरे	28
29.	हिंदी गृह पत्रिका रश्मि के 33 वें अंक का विमोचन	29
30.	नराकास पुरस्कार वितरण समारोह वर्ष, 2022	30
31.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	31
32.	हिंदी कार्यशाला	32
33.	लेखापरीक्षा के पन्नों से ...	33
34.	राजभाषा अधिनियम, 1963	34
35.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम	38

सेवा निवृत्ति संदेश

श्री आर. के. मंथापुरवार
व.ले.प.अ.

पाने को मुलाज़मत हमने भी खूब पसीना बहाया है।
रातों को कम सोया है और हाथ रोककर खाया है।
मिलने पर तेरे ऐसा सुकून पाया था।
जैसे गहरे समुद्र में गोताखोर मोती ढूंढकर लाया है।

घर छूटा, देस छूटा, लोग अपने छोड़कर आए थे।
बना ली दुनिया सहारे उनके जो पहले केवल पराये थे।
आए थे जिस दिन यहाँ, पता था हम कितने दिनों के मेहमां होंगे।
हमेशा यही कोशिश थी, की बाद मेरे बस अच्छे निशां होंगे।

उम्र के साथ अरमानों की झोली भी भरकर लाये थे।
बहुत कुछ पाया है, बदले में बस उम्र खर्च करते रहे।
हर दुआ कबूल हुई मेरी, कुछ और मांगू वह भी शायद मिल जाएगा।
देने वाले ने कम न दिया, बस अब और मांगा नहीं जायेगा।

पूछते थे सब कैसे हो, लोग सारे मुझे अपने से लगते हैं।
दुखः दर्द मैंने इनसे बांटे हैं, यहाँ आधा घर मेरा बसा है।
कभी मेरी किसी बात से कोई अपना आहत हुआ होगा।
भुला देना यह सोचकर, शायद किसी गुस्से में बोल दिया होगा।

बहुत से लोगों के परिचय में यहाँ हमेशा धोखा खाता गया।
मुस्कुराते तो सब दिखे, मुस्कुराहटों में अभिनय पाता गया।
दिल जीतने की कोशिश तो बस हम अकेले ही करते रहे।
फिर भी दिल टूटने का सारा दोष हमीं पर डाला गया।

बहुत कुछ सिखाया है इस दौर ने हमें।
और धीरे-धीरे हम भी तजुर्बेकार होते गए।
फिर भी कुछ लोगों ने हमें इस्तेमाल कर लिया।
और कभी हम खुद भी इस्तेमाल होते गए।

हर चीज के खरीददार मिल जाएंगे, जहां सामान बिकता है।
बाज़ार इसे कहते नहीं, फिर भी ईमान यहाँ बिकता है।
खरीददार अगर मिल जाएँ, तो यहाँ बिकने को सब तैयार है।
ऐसा पहले भी चलता था, और ऐसा अब भी चलता है।

यहाँ कुछ लोगों को अब यह भी काम करना होगा।
सिर्फ ज़िम्मेदारी देना नहीं, ज़िम्मेदारी उठाना भी सीखना होगा।
चापलूसी नहीं, काम करते हुए इज्जत पाना चाहिए।
यह मंत्र मेरा जरूरी ही नहीं, इसे जरूरत भी बनाना होगा।

एक तरफ यहाँ अफसानों को हवाओं में उड़ते हमने बहुत सुना है।
दूसरी तरफ, मोतियों को पन्नों पर छपते हुए भी यहीं देखा है।
छोटी सी बात का बतंगड़ और राई के पर्वत भी यहीं बनते हैं।
सुख-दुख में एक दूसरों के साथ, खड़े भी सबको हमने यहीं देखा है।

जीवन में कुछ भारी पल ऐसे भी आयें, जब हम लाचार हुये।
बगैर किसी भूल के, कुछ कटाक्ष हम भी सुन आएं।
थोड़ी ज़िम्मेदारी अपनों की, चुप रहने को मजबूर हुए।
न चाहते हुए भी, रास्ते के पत्थरों को तिलक कर आयें।

कैसे बीत गया वक्त, छतों के पुराने पंखों से ए.सी तक आ गए।
टाइपराइटर की खटपट छोड़, अब दफ्तर में शांत कम्प्युटर छा गए।
बदल गए दिन हमारे भी, हासिल बहुत कुछ हमने भी कर लिया।
चलते थे दो चक्कों पर, अब चार चक्कों पर सवार हो गए।

कुर्सी छूटी, मेज़ छूटी, अलमारी थी मेरी, वो भी छूट गयी है।
साथ उनके जुड़ी यादें ही अब, जीने का सामान बना है।
इस इमारत में बिताएँ पलों को मिलने मैं बार-बार आऊँगा।
इन्हीं वजहों से तो मेरा वजूद और छोटा सा आशियाँ बना है।

यूं तो जीवनपथ के सफर का यह सुहाना पड़ाव ज़िम्मेदारी से हमने पार किया।
अब इस चक्र में अपनी शाम की तरफ अग्रसर भी होना होगा।
छोड़कर जाने को कदम मेरे उठते नहीं, पर दिल को हमें यह समझाना होगा।
जो आया यहाँ निश्चित उसे जाना है, आज मैं हूँ, कल किसी और को यहाँ आना होगा।

पूछा है सबने, अब क्या करने का ठाना है।
उम्र गुजार दी काम में, अब ख़ुद के लिए जीने का इरादा है।
अपनों के संग खुलकर आनंद के साथ बिता देंगे।
बची हुई जिंदगी से बस, अब यही मेरा वादा है।

❑ ❑ ❑

उम्मीद

श्रीमती अर्चना राज चौबे
पत्नी, श्री आर.के.चौबे,
व.ले.प.अ.

सुर्ख कागज़ के मस्तूलों
वाली सुनहरी नौकाएं

जब विहार करें

बारिश को नहीं होना चाहिए।

जैसे हँसते मुस्कुराते हुए बच्चे
जब शैतानियाँ करें

गुस्से को नहीं होना चाहिए ,

एक छोटी सी बच्ची के गुलाबी फ्रॉक के घेरे सी

सुन्दर इस धरती पर

पूरे आसमान की सी मुस्कुराहट और प्रेम को बिछ जाना चाहिए

और उस पर काढ़े गए ढेरों रंग-बिरंगे बेल-बूटों

को ज़मीन में उग आना चाहिए कि पूरी सृष्टि उस गोल-गोल रानी इत्ता इत्ता

पानी खेलती बच्ची की खिलखिलाहटों से गूँज उठे,

बारिश का मौसम जब अनगिनत कश्तियों में

बच्चों के सपनों से भर जाये तो ईश्वर को उनमे

प्राण फूंक देने चाहिए

कि हर सपना अपनी मुकम्मिल मंजिल का हकदार बने

और हर गिरती उम्मीद को चुपके से अपनी ऊँगली थमा देनी चाहिए

कि हौसला उन्हें फिर से खड़ा कर सके।

एक कोरे कागज़ पर रह गए कुछ आंसुओं के

धब्बे टूटी हुयी रंगीन पेंसिलों की वो चुभन है जो

गमले वाले पौधे के उकेरे जाने से पहले ही तोड़ दी गयी

कि वहां स्याहियों से अ ब स द लिखा जाना

मुक़र्रर किया गया था।

कि जो बेहद नीरस था।

कि जिसे ललक से भरा होना था,

बीरबहूटियों को बिन मौसम भी नज़र आना चाहिए

कि ये जंगल से मन को ख़ुशी से भर देते हैं

और बुरांश या कि गुलमोहर को अमलतासों से

लिपट जाना चाहिए कि ये उदासियों पर प्रेम की छाप हैं,

इन सबके लिए नफरतों, घृणाओं औ

धर्मान्धताओं को तिलांजलि दे इस दुनिया की

सभी औरतों को कुछ और मजबूत

और मर्दों को कुछ और संवेदनशील होना चाहिए।

एक दूसरे के साथ हंसने और रोने की कड़ी होना चाहिए।

अहम के पार चाह की खलिश होना चाहिए

और बेवजह यूँ ही मुस्कुराने की वजह होनी चाहिए,

ये सब कुछ जो होना चाहिए उसका न होना और

जो नहीं होना चाहिए उसका होना एक ऐसी गलती है

जिसका सुधार नहीं होता

जिसकी माफ़ी नहीं होती

❑ ❑ ❑

कोसली भाषा के प्रसिद्ध कविः पद्मश्री हलधर नाग

श्री दिलीप कुमार परिडा
व.ले.प.

साहब ! दिल्ली आने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं, कृपया मेरा पुरस्कार डाक से भिजवा दें ।

यह है श्री हलधर नाग जिनके नाम के आगे पहले कभी शायद ही श्री लगाया गया हो, सिर्फ 3 जोड़ी कपड़े, एक टूटी फूटी चप्पल और कुल जमा पूंजी 732 रुपये का मालिक एवं अति साधारण तथा सादगी से जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति आज पद्मश्री सम्मान से सम्मानित हो रहे थे ।

ओडिशा के बरगड़ जिला निवासी, श्री हलधर नाग कोसली भाषा के एक प्रसिद्ध कवि हैं। ख़ास बात यह है कि उन्होंने जो भी कविताएं और 20 महाकाव्य अभी तक लिखे हैं, वे उन्हें जुबानी याद हैं। अब संभलपुर विश्वविद्यालय में उनके लेखन के एक संकलन हलधर ग्रन्थावली-2 को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। सिर्फ इतना ही नहीं, 5 शोधार्थी अब उनके साहित्य पर शोध कर रहे हैं, जबकि श्री हलधर नाग खुद तीसरी कक्षा तक पढ़े हैं। सादा लिबास, सफेद धोती, गमछा और बनियान पहने, श्री हलधर नाग आम तौर पर नंगे पैर ही रहते हैं।

ओड़िया या भाषा के लोक-कवि श्री हलधर नाग एक गरीब दलित परिवार से आते हैं। मात्र 10 साल की आयु में मां-बाप के देहांत के बाद उन्होंने तीसरी कक्षा में ही स्कूली पढ़ाई छोड़ दी थी। शुरुआती दिनों में उन्होंने ढाबा में जूठे बर्तन साफ करके कई साल गुजारे। बाद में एक स्कूल में उन्हें रसोई की देखरेख का काम मिला। कुछ वर्षों बाद बैंक से 1000 रुपये कर्ज लेकर उसी स्कूल के सामने एक पेन-पेंसिल आदि की छोटी सी दुकान खोल ली, जिसमें वे छुट्टी के समय पार्ट टाईम बैठ जाते थे। यह थी उनकी आर्थिक हालात।

श्री हलधर नाग ने वर्ष 1990 में स्थानीय कोसली (ओड़िया) भाषा में ''धड़ वरगछ'' (पुराना बरगद का पेड़) नामक एक कविता लिखी। उसके बाद वर्ष 1995 के आसपास स्थानीय ओड़िया भाषा में ''राम-शबरी'' जैसे कुछ धार्मिक प्रसंगों पर लिख लिख कर लोगों को सुनाना शुरू किया। उनकी कविताएं मुख्यतः प्रकृति, समाज तथा धार्मिक प्रसंगों पर आधारित हैं। अपनी सुंदर रचनाओं के माध्यम से वे सामाजिक सुधार को बढ़ावा देने की चाह रखते हैं। भावनाओं से पूर्ण कवितायें लिख कर एवं उन्हें लोगों के बीच प्रस्तुत करते-करते वे इतने लोकप्रिय हो गये कि वर्ष 2016 में भारत सरकार ने साहित्य के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान के लिये उन्हें पद्मश्री सम्मान प्रदान करने का निर्णय लिया।

ऐसी असाधारण प्रतिभा होते हुए भी वे अति साधारण तथा सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। श्री हलधर नाग की सादगी और साधारण व्यक्तित्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब उन्हें पद्मश्री के लिए उनके नामांकन के बारे में फोन आया तो उन्होंने कहा ''साहब! मेरे पास दिल्ली आने के लिए पैसे नहीं हैं, कृपया मेरा पुरस्कार (पद्मश्री) डाक से भेजें।''

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी के हाथों से पद्मश्री सम्मान ग्रहण करने के लिए एक सफ़ेद धोती, गमछा, उनकी पारंपारिक वेशभूषा में वे नंगे पैर पहुंचे थे । नमन है ऐसे महान पुरुष को, जिनका लक्ष्य धन अर्जन नहीं बल्कि ज्ञानार्जन है। श्री हलधर नाग ने काव्यों की रचना कर साहित्य जगत में समृद्ध किया। साहित्य जगत में उनका महत्वपूर्ण योगदान वाकई सराहनीय है।

❑ ❑ ❑

सफलता का बीजमंत्र

श्री राजीव रंजन
डी.ई.ओ.

यह दुर्लभ जीवन स्वयं के अभावग्रस्त होने का रोना रोने के लिए नहीं मिला है और न यह कहकर पल्ला झाड़ने के लिए कि क्या करें। मैं करना तो बहुत कुछ चाहता था, लेकिन घर-परिवार में माहौल ही नहीं मिला। पुरुषार्थी वह नहीं है, जो अनुकूल माहौल न होने पर आंसू बहाए, बल्कि वह है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी अनुकूल माहौल बनाकर के अपने होने का अर्थ सिद्ध करे।

सफलता स्वर्ग से टपकने वाली या दया व कृपा से मिलने वाली कोई वस्तु नहीं है, बल्कि यह हमारे संघर्ष, चिंतन और कर्म के सकारात्मक त्रिकोण का गुणनफल है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक माइकल जैफरोज के अनुसार हम यदि चुनिंदा प्रेरक वक्ताओं, लेखकों, विक्रय-प्रबंधकों के साक्षात्कार सोच का कुछ हिस्सा अपनी आदतों में शुमार कर लें तो दुनिया की कोई ताकत हमें सफल होने से नहीं रोक सकती। किसी लक्ष्य की ओर अग्रसर व्यक्ति की टांगें खींचना दुनिया की पुरानी आदत है। जो अपने जीवन में कुछ ठोस नहीं कर सकता, वह यही कर सकता है। महत्वपूर्ण यह नहीं है कि दूसरे लोग आपको क्या आंकते या समझते हैं। अहम बात यह है कि आप स्वयं को कैसा समझते हैं। आत्म-मूल्यांकन में स्वयं को उत्कृष्ट आंकना सफलता का मूल मंत्र है।

यदि आप चरणबद्ध तरीके से जीवन जीते हैं तो सफलता ही नहीं बल्कि आंतरिक शांति के साथ-साथ आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति भी सौ फीसदी निश्चित है।

❑ ❑ ❑

नारी

सुश्री नीलम देवी
कनिष्ठ अनुवादक

ममता, करुणा और दया का एक
युगल स्वरूप है नारी,
सीता सावित्री राधा और मीरा का
ही रूप है नारी ।
कलयुग के इस कठिन दौर में द्वापर
का अवतार है नारी,
वेदों की इस पृष्ठभूमि में धरती का
श्रृंगार है नारी ।
सूक्ष्म रूप बेटी का लेकर जब ये घर में आती है,
बढ़ जाती है रौनक, घर पे खुशियाँ ये बरसाती हैं।
माँ के भीगे नैनों में भी हरियाली छा जाती है,
नन्हें-नन्हें पावों में जब पायल ये छनकाती हैं।
फूलों सी मुस्कान घरों के आँगन में फैलाती हैं,
दिन-दिन बढ़ती बेलों सी यह कली फूल बन जाती है ।
सुख दुख में यह साथ निभाती सबको यह समझाती है ,
खुद सहती है धूप छांव, पर शीतलता फैलाती है ।

पत्नी बनकर जब एक दिन यह औरों के घर जाती है,
घर के सारे दायित्वों को भली-भांति निपटाती है ।
सास ससुर की सेवा करती सबको गले लगाती है,
गृहस्वामिनी, गृहलक्ष्मी और कल्याणी कहलाती है ।

निर्मम और निष्ठुर दुनिया में ममता का संसार है नारी ,
भ्रष्टाचार के बढ़ते युग में मानवता का भंडार है नारी ।
सहनशक्ति,क्षमाशीलता और ज्ञान का विस्तार है नारी,
दया, स्नेह और मृदुलता का कलयुग में अवतार है नारी।

❑ ❑ ❑

हैप्पी फादर्स डे, माँ !

सुश्री वंदना
डी.ई.ओ.

माँ, ज़िंदगी में कुछ चीज़ें ऐसी होती है जिन्हें आप ना मांगते हैं, ना चाहते हैं और ना ही उनके लिए कोई योजना बनाते हैं। कुछ चीज़ें बस हो जाती हैं। जहां ज़्यादातर लोग किसी चमत्कार के इंतज़ार में रहते हैं, वहीं कुछ ऐसे सुपर हीरो भी होते हैं जो अपने तय किरदार से हट कर भी अन्य ऐसे किरदार निभाते हैं जिनके लिए उन्होंने कभी सोचा भी नहीं होता। ऐसी ही एक सुपर हीरो आप भी हो माँ जिन्होंने समाज की सीमाओं से परे जाकर और रुढ़ीवादी बेड़ियों को तोड़ कर सिंगल मदर का किरदार निभाया।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी फादर्स डे पर लोगों के पोस्ट पढ़े जिसमें कैपशन में माई सुपर हिरो डैड, माई फाइटर डैड लिखा था । उसे पढ़ कर यह ख्याल आया कि जैसे दुनिया को बचाने वाले और उसका ध्यान रखने वाले लोग सुपर हीरो या फाइटर बन जाते हैं वैसे ही शायद घर को बचाकर रखने और उसका ध्यान रखने की वजह से पापा सुपर हीरो या फाइटर बन जाते होंगे। पर मैंने अपने बचपन से आपको ही यह सब करते देखा है....तो मेरी सुपर हीरो आप हुई, माँ...। आप ही हैं जो हर रोज विपरीत परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करती हैं, दुनिया से मुझे और भाई को बचा कर रखती हैं और हमें ताकत और प्रेरणा देती हैं।

बहुत से लोग सोचते हैं कि सिंगल मदर होना आपकी नौकरी है, आपकी ज़िम्मेदारी है या कुछ ऐसा जो आपको ही करना है। ईमानदारी से कहूँ तो, नहीं, यह आपका काम नहीं था । आपको अकेले ही मेरी देखभाल नहीं करनी थी । आपने जो किया है उसका केवल आधा ही करना था आपको, लेकिन आपने दोहरी भूमिका निभाई। आज मैं जो कुछ भी हूँ और जीवन के जिस भी मुकाम पर हूँ, सिर्फ आपकी वजह से हूँ। ऐसे भी लोग हैं जो उस कठिन समय में हार मान लेते हैं पर हारना कभी आपके शब्दकोश का हिस्सा ही नहीं था ।

मुझे पता है कि यह एक आसान सफर नहीं रहा होगा, और ऊपर से मेरी शरारतें भी कुछ कम नहीं थी । लेकिन आपने हमेशा मुझे सबसे पहले रखा और मेरे जीवन को सुंदर बनाने के लिए अपना सब कुछ छोड़ दिया। हम कुछ कठिन समय से गुजरे हैं और बहुत से मज़ेदार पल भी बिताए हैं। माँ की तरह लाड प्यार किया, तो पापा की तरह पिटाई भी की, दोस्त की तरह बहुत सी गप्पें भी मारी और गुरु की तरह सही गलत भी सिखाया। किसी राजकुमारी की तरह शाही जीवन दिया तो साथ ही ज़मीन से भी जोड़े रखा । मुझे पता है कि काम, समाज, परिवार और हमें एक साथ संभालना आसान नहीं रहा होगा, लेकिन आपने हँसते-हँसते सब किया है ।

ज़िंदगी हमें बहुत कुछ सिखाती है,
कभी हँसाती है तो कभी रुलाती है,
मगर जो हर हाल में खुश रहे,
ज़िंदगी उसी के आगे सर झुकाती है ।

इन पंक्तियों का असल मतलब मैंने आपके ज़िंदगी जीने के अंदाज़ से ही तो सीखा है ।

कई बार ऐसा हुआ जब मैंने आपको निराश

किया, परिस्थितियों से भागने का प्रयास किया, जैसे हर कोई शायद कभी ना कभी करता ही है। लेकिन आपने मुझमें विश्वास दिखाया और मुझे हर परिस्थिति से लड़ना सिखाया। स्कूल या कॉलेज में जब भी किसी ने मेरा दिल दुखाया तो आपने ही मुझे समझाया कि रोना ठीक है, आहत महसूस करना ठीक है और अपनी भावनाओं को अंदर न रख कर, व्यक्त कर देना ठीक है। लेकिन साथ ही, यह भी सिखाया कि समाज में जीने के लिए अपने आँसू खुद ही पोंछ कर, अपने जीवन का बॉस बनना भी ज़रूरी है।

मेरी हर तरक्की पर सबसे आगे खड़े होकर ताली बजाई, मेरी हर मार्कशीट पर मेरी पीठ थपथपाई। जहां आज भी कई लोग 21-22 की उम्र के बाद अपनी बेटी की शादी की चिंता में लग जाते हैं वहीं तुम मेरी सरकारी नौकरी लगने पर फूली नहीं समाई। आज भी याद है मुझे वो दिन, आँखों में आँसू, हाथ में मेरा नियुक्ति पत्र चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान बयां कर रही थी, कैसे तुम मुझसे भी ज्यादा उत्साहित थी।

कोई भी औरत माँ तो बन सकती है, पर एक साहसी माँ ही पिता भी बन सकती है। सच कहूँ माँ, तो तुम तो फाइटर हो, मेरी सुपर हीरो, मेरी वन्डर वोमैन और तुमने तो मुझे भी फाइटर की तरह ही बड़ा किया है। मुझे नहीं पता कि मैं कहाँ होती अगर मेरे पास आप नहीं होती। जब पापा ने अपने हिस्से की जिम्मेदारियाँ छोड़ने का फैसला किया, उस समय दो भूमिकाएँ निभाने के लिए शुक्रिया। आपने मुझे विश्वास दिलाया कि हमारा अतीत हमें परिभाषित नहीं करता है और हम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हैं।

आप जानती हो कि दुनिया में सबसे बहादुर कौन है वो हो आप और आपके जैसी वो सारी औरतें जो सिंगल मदर का टाइटल लेकर दोहरी भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ निभा रही हैं।

इसलिए हर वर्ष मदर्स डे पर तो विश करती हूँ, पर इस वर्ष कहना चाहती हूँ हैप्पी फदर्स डे, माँ। मुझे वंदना कुमुद शर्मा के नाम से एक पहचान देने के लिए शुक्रिया।

खुद का फर्ज़ निभाती
वो पापा का भी फर्ज़ निभाने लगी
संस्कार सिखाती वो हमें
दुनियादारी भी समझाने लगी
लाड लड़ाती वो हमें
अब डांट भी लगाने लगी
घर संभालती वो
घर चलाने भी लगी
एक तरफ़ा ज़िम्मेदारी की हकदार
दोहरी ज़िम्मेदारी निभाने लगी
परेशानियाँ झेलकर
वो हमें हंसाने लगी
आँखों में आँसू लेकर
वो खुद मुस्कुराने लगी
एक किरदार में होकर
वो हर किरदार निभाने लगी
वो माँ का प्यार तो देती है
हर रिश्ते का प्यार भी जताने लगी
वो माँ है मेरी
जो पापा का फर्ज़ भी निभाने लगी।

❑❑❑

पर वो दिल का तो बुरा नहीं है!

श्रीमती कंचन
पत्नी, श्री वाई. के. दीपक,
स.ले.प.अ.

मंगू– गुरुजी, मैं सच बोल रहा हूँ मेरा मित्र चंगू नाम के अनुसार ही दिल का बड़ा चंगा है। लोग उसके बारे में जो बोलें पर वो दिल का बुरा नहीं है।

बाबा (मुस्कुराते हुए)– बेटा, आप तो सोच रहे हो कि आप अपने मित्र की तारीफ कर रहे हो। उसके बारे में एक सकारात्मक बात बता रहे हो। परंतु यहाँ साथ में आप उसकी एक बहुत बड़ी कमी भी ज़ाहिर कर रहे हो।

मंगू– कमी!? पर मैंने कब उसकी किसी कमी का ज़िक्र किया गुरुजी?

बाबा– ''पर वो दिल का बुरा नहीं है, ये जो कथन है ना ये खुद ही उसकी एक कमी बता रहा है।

मंगू– आप क्या कह रहे हैं समझा नहीं मैं !

बाबा– सामान्य तौर पर देखें तो ये वाक्यांश एक सकारात्मक उक्ति प्रतीत होती है जिसमें किसी के दिल से अच्छे होने की वकालत की जा रही है कि भले उसका स्वभाव गुस्से वाला हो, लोगों से व्यवहार अच्छा नहीं हो पर वो दिल का बुरा नहीं है। पर गौर से सोचने पर पाओगे कि यह वाक्यांश पूरे तौर पर एक सकारात्मक उक्ति नहीं है।

मंगू– पर वो कैसे?

बाबा– यहाँ दो बातें हैं, एक तो ये कि कोई दिल से बुरा नहीं है पर अगर अपने स्वभाव से वह खुद के दिल से अच्छा होने को लोगों के सामने ज़ाहिर नहीं करता है तो क्या उसका सिर्फ़ दिल से अच्छा होना काफ़ी है ! अच्छा बताओ, आपके मित्र के दिल के करीब कितने लोग होंगे जिनको ये मालूम है कि चंगू दिल का बहुत अच्छा है?

मंगू– मुझे मिलाकर शायद चार या पाँच लोग।

बाबा– ऐसे सिर्फ़ पाँच दस लोग ही होते हैं जो आपके दिल के इतने करीब के होते हैं कि उन्हें ये एहसास आपके बिना ज़ाहिर किये भी हो जाता है कि आप दिल के बुरे नहीं हो। बाकी लोगों के सामने आपके व्यवहार की कुशलता ही यह बयां करती है कि आप दिल से अच्छे हो। ये जो कुशलता है, उसे सॉफ्ट स्किल्स कहा जाता है।

मंगू– अच्छा! तो क्या अब इस ससुरे स्किल्स की भी सॉफ्ट कॉपी आने लगी है?

बाबा (हंसते हुये)–ये कॉपी नहीं है। इसी को हम व्यवहार कुशलता या बिहेवियर स्किल्स कहते हैं। स्किल्स दो तरह के होते हैं। एक हार्ड स्किल्स जिसका तात्पर्य तकनीकी कुशलता या पेशेवर कुशलता से है जो हम अपने अध्ययन से अर्जित करते हैं, जिन डिग्री या सर्टिफिकेट के आधार पर आप जॉब अर्जित करते हैं उनसे है जबकि सॉफ्ट स्किल्स से तात्पर्य कार्यक्षेत्र कुशलता से है, व्यवहार कुशलता से है।

मंगू– ओह अच्छा !

बाबा– हाँ, और हमें अपने सॉफ्ट स्किल्स को विकसित करना बहुत अनिवार्य है। क्यूंकि हमें अपने बर्ताव से भी ये जताना जरूरी होता है कि हम दिल से अच्छे हैं। और ये हर क्षेत्र में लागू होता है– अपने पारिवारिक जीवन में, अपने सामाजिक जीवन में और अपने कार्य क्षेत्र में। अगर हम अपने कैरियर या व्यवसाय में आगे जाना चाहते हैं तो सॉफ्ट स्किल्स बहुत ज़रूरी होता है।

मंगू– पर क्या इसका मतलब ये है कि हमें सबके सामने ये साबित करने की ज़रूरत है की हम दिल से अच्छे हैं !

बाबा– नहीं, इसका मतलब ये कदापि नहीं कि हमें सबके सामने खुद को साबित करने की ज़रूरत है। पर जिनसे हमारा सामना होता है उनके साथ हमारा बर्ताव ऐसा होना चाहिये कि व्यवहार से ही लोग समझ जाये कि हम दिल से बुरे नहीं हैं।

मंगू– गुरुजी, अब मन में ये उत्सुकता हो रही है कि आखिर ये सॉफ्ट स्किल्स होते कौन कौन से हैं।

बाबा– सॉफ्ट स्किल्स के अंतर्गत प्रभावी संप्रेषण कौशल (Communication skill), समानुभूति (Empathy), नेतृत्व कौशल (Leadership skill), समय प्रबंधन कौशल (Time Management Skill) इत्यादि आते हैं।

मंगू– गुरुजी, ये संप्रेषण कौशल का अर्थ तो बात करने का हुनर हुआ ना ?

बाबा– पचास प्रतिशत सही हो आप।

मंगू– अब ये बाकी का पचास प्रतिशत का ज्ञान आप ही बता दो प्रभु।

बाबा (मुस्कुराते हुये)– संप्रेषण कौशल का ही महत्वपूर्ण पहलू है ध्यान से सुनने का कौशल (Listening Skill)। हमेशा सभी को ये ही पसंद होता कि वह जो कुछ भी बोले अधिक से अधिक लोग उसकी बातों को ध्यान से सुनें और उन पर गौर करें। इसके लिए हमें सबसे पहले दूसरों की बातों को पूरा ध्यान से सुनना चाहिए। यदि किसी बात को ध्यान से नहीं सुनोगे तो उनका जवाब देने में भी हिचकिचाहट होगी। इसलिए यदि कोई बात कर रहा है तो उनकी बात को ध्यान से सुनो।

मंगू – हाँ बात तो आप सही कह रहे हैं और मैं बहुत ध्यान से आपकी बात सुन भी रहा हूँ।

बाबा – इसके साथ ही यदि आप किसी से बात कर रहे हैं तो सिर्फ उनसे बात ही करें। मेरा मतलब आप साथ में कोई दूसरा काम नहीं करें। किसी व्यक्ति को सफल बनाने में उसका संवाद करने का तरीका बहुत बड़ी भूमिका निभाता है, फिर चाहे वो संवाद अपने किसी विशिष्ट अधिकारी से हो या फिर साथ में काम करने वाले साथी से हो। हमेशा सही जगह पर सही भाषा का चयन होना बहुत ही जरूरी है।आप जब भी किसी से बात करें तो उसके सामने देखकर ही उससे बात करें। ऐसा करने से आप सामने वाले को उसके चेहरे से, हावभाव और आँखों से, उसकी भावनाओं को और भी बेहतर तरीके से समझ पाओगे। क्योंकि जब भी हम बोलते हैं तो हमारा चेहरा और आंखे बहुत कुछ बोल जाती हैं।

मंगू – वाह गुरुजी आपका संवाद संप्रेषण तो शायराना भी है।

बाबा – महत्वपूर्ण है बात का समझ में आना, चाहे वो साहित्यिक हो या शायराना।

मंगू – वाह गुरुजी वाह, अब कविता भी! और वो भी इतनी सुंदर! अब ये बताओ कि ये जो लीडरशिप स्किल का ज़िक्र किया आपने वो भी जरूरी है क्या! हमारे कार्यालय में तो सब यही बोलते हैं कि ज़्यादा लीडर बनने की ज़रूरत नहीं हैं और कार्यालय के बाहर भी नेतागिरी को सम्मान से नहीं देखते।

बाबा – बेटा, कार्यालय में सिर्फ़ प्रशासन वाले कहते होंगे वैसा। कारण ये कि किसी के लीडर बनने से उनका काम बढ़ता है। और रही बाहर की बात तो लीडरशिप कौशल का अर्थ नेतागिरी नहीं है। नेतृत्व कौशल का मतलब है लोगों को साथ लेकर चलना। यदि आप किसी से बात कर रहे हैं तो उस बात को आप पूरे आत्मविश्वास के साथ कहें। क्योंकि हम जब भी कोई बात पूरे आत्मविश्वास के साथ कहते हैं तो लोग आपकी बात आसानी से मान भी लेते हैं और पूरा विश्वास भी करते हैं।

मंगू – गुरुजी, आप तो बोर्न लीडर हो। पर ये सॉफ्ट स्किल्स भी तो जन्मजात गुण ही हुये ना, इनको हम सीख थोड़े ना सकते हैं ?

बाबा – ये स्किल्स कम या ज़्यादा सभी के

अंदर होते हैं। इसे सीखने की नहीं, विकसित करने की ज़रूरत होती है और ये सुधार तो अनवरत है जो मुझे, आपको और बाकी सभी को हमेशा करनी चाहिये।

मंगू – अच्छा गुरुजी ये Empathy जो है वो Symapthy की छोटी बहन है क्या?

बाबा – समानुभूति यानि कि Empathy, सहानुभूति यानि कि Sympathy की छोटी बहन नहीं, बड़ी बहन है। समानुभूति का मतलब है, 'दूसरा जैसा महसूस कर रहा है, वैसा ही महसूस करना'। इसके लिए स्वयं को दूसरे के स्थान पर रखकर सोचना होता है। सहानुभूति में हम दूसरे के दुख को पहचानकर उसकी मदद करने की सोचते हैं। हमारा स्वयं दुखी होना जरूरी नहीं है। सहानुभूति में एक दूरी है, जबकि समानुभूति में स्वयं वही भाव महसूस करने के कारण बराबरी है।

मंगू – वाह गुरुजी, आप जिस ढंग से बताते हो ये सारी बातें कि कोई भी उलझन नहीं रहती। मैं ये समझ गया कि ''पर वो दिल का बुरा नहीं है।'' इस वाक्य का प्रयोग हम एक ढाल के रूप में करते हैं किसी के व्यवहार या स्वभाव की कोई कमी को छुपाने के लिये।

बाबा – हाँ! और अगर अब कहीं किसी को यह कहते हुए सुनो कि वो तो दिल का बुरा नहीं है तो ये समझ जाना की उन महाशय या महोदया को अपने सॉफ्ट स्किल्स को विकसित करने की आवश्यकता है।

मंगू – गुरुजी, एक बात मैं बहुत विनम्रता के साथ कहना चाहता हूँ कि ये कुशलता की बातें आज के लिये बहुत हो गयीं। ये सॉफ्ट स्किल्स की नयी बातें अब मेरे हार्ड स्कल यानि कि जड़ दिमाग़ पर भारी पड़ रहीं हैं। तो अब इसके आगे की बातें बाद में गुरुजी।

बाबा – ठीक है, ठीक है। और बातें फिर कभी। प्रसन्न रहो। मस्त रहो। विनम्र रहो।

❑ ❑ ❑

आज़ादी का अमृत महोत्सव

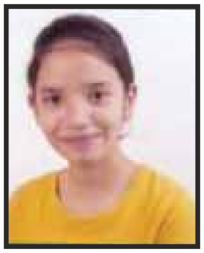

सुश्री सेजल भोपसे
सुपुत्री, श्रीमती सुनिता भोपसे,
व.ले.प.

''फौजी''

जिस मिट्टी पर जन्म लिया।
देश के लिए उस मिट्टी में
मिल जाते हैं।
ऋणी हैं हम उन जवानों के जो,
सरहद पर जीवन बिताते हैं।
देश के लिए मर मिटने को तैयार,
अपने लहू से इस धरती को सींच जाते हैं।
फर्ज़ के नाम पर देखो ये वीर
मुस्कुराकर मौत को गले लगाते हैं।
हम मनाते दीवाली परिवार संग,
होली पर रंग उड़ाते हैं।
हिम्मत तो देखो, उन वीरों की,
जो गोला-बारुदों के बीच त्यौहार मनाते हैं।
मंदिर, मस्जिद के नाम पर,
हम धर्म में गए बाँटे हैं,
भूलकर भी ना करें यह भूल उन वीरों के सामने
वे सिर्फ तिरंगे के सामने शीश झुकाते हैं।

❑ ❑ ❑

री ज़िन्दगी, तू थोड़ी तो आसान होती

श्री. वाई. के. दीपक
स.ले.प.अ.

मंज़र ये तेरे पहले से कुछ तो पता देते
कल होगी सुबह कैसी ये तो बता देते
कभी ज़रा सी तू भी तो प्री-प्लान होती
री ज़िन्दगी, तू थोड़ी तो आसान होती

कभी नाम दे के नाते को भाव दिये तुमने
भाव मिले कहीं, रिश्ते का नाम लगे ढूंढ़ने
अचरज क्या जो तेरी बांहें, हैं हैरान होती
री ज़िन्दगी, तू थोड़ी तो आसान होती

तुझको ना यूं इतना मैं उलझाता
पढ़ के उदाहरण खुद ही सुलझाता
तू पाठ्यपुस्तक कोई विज्ञान होती
री ज़िन्दगी, तू थोड़ी तो आसान होती

जब हौसले दिये चट्टान से, शांत थी हवायें
जब टूटा था दिल, तो तूफां बवंडर उठाये
अपने मुताबिक कभी कदमों में जान होती
री ज़िन्दगी, तू थोड़ी तो आसान होती

शिकवा है ये उसको, मैं जताता क्यूं नहीं
प्यार है इतना, ज़माने को बताता क्यूं नहीं
काश ये दुनिया भी इतनी नादान होती
री ज़िन्दगी, तू थोड़ी तो आसान होती

होंठ रहें खामोश, जब दिल चाहे कहना
मति का ही सुन के, फिर क्यूं बयां करना
दी तूने गर दिल को अलग से ज़ुबां होती
री ज़िन्दगी, तू थोड़ी तो आसां होती

ये असर ऐसा है सब आपके इरशाद से
करता हूं नज़र इसको आपके हर दाद पे
कविता भला ऐसी आपके बिन कहां होती
री ज़िन्दगी, काश तू ऐसी ही आसां होती !

❑ ❑ ❑

काए की जरूरत

श्रीमती प्रीति
पत्नी, श्री रवि प्रिंस,
एम.टी.एस.

जब हमारे घर पर पैसों की तंगहाली मची हुई रहती थी,

तब हमें बहुत मुश्किल होती थी, याद है मुझे जब मैं छोटी थी,

मैं और मेरा परिवार एक क्वार्टर में रहते थे,

मेरे पापाजी की भी तनख्वाह ज्यादा नहीं थी,

बाकि माँ भी हाउसवाइफ थी, माँ घर पे हमारा ध्यान रखती थी।

मेरे दो भाई हैं, रौशन और पंकज दोनों बहुत मेहनती हैं,

दोनों को प्यार से राजा और गुड्डू कहते हैं

जब मैं अपनी सहेलियों के पास गुड़िया देखती थी मुझे बहुत जलन होती थी

सोचती थी काश मेरे पास भी एक गुड़िया होती उस गुड़िया को मैं अपने पास रखती

पर हम वो भी नहीं कर सकते थे क्योंकि उतने पैसे नहीं थे

तो मेरे पापाजी मुझे कपड़े की गुड़िया बना कर देते थे

हर रोज एक व्यक्ति मुरमुरे का चिवड़ा बेचने आया करता था,

कई दफा हम आठ आने का पैकेट लेकर थोड़ा-थोड़ा खाकर दिन गुजारे थे

मेरे पिताजी चाहते थे की मैं वकील बनूं, क्योंकि मैं झगड़ालू थी,

पापाजी से सब समाज वाले डरते थे

पर पापाजी मेरे से डरते थे......!!

❑ ❑ ❑

जीवन का अर्थ जीवन को एक अर्थ देना है ...

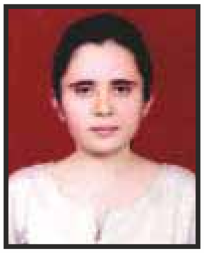

सुश्री श्वेता शर्मा
व. लेखापरीक्षक/
शाखा कार्यालय, मुंबई

मार्टिन लूथर किंग ने एक बार कहा था, यदि किसी व्यक्ति ने कुछ नहीं खोजा है, तो वह मर जाएगा, वह जीने के योग्य नहीं है।

उपरोक्त उद्धरण में कुछ की खोज करना मनुष्य को जीवन के अर्थ को समझने के लिए मजबूर करता है। जीवन के अर्थ को समझने की यह खोज इतनी पुरानी है कि इसने शाक्यमुनि सिद्धार्थ को एक वृद्ध व्यक्ति, रोगग्रस्त व्यक्ति, सड़ती हुई लाश, तपस्वी व्यक्ति को देखकर, कुलीन राज्य छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया था। वह तपस्वी बन गए, ज्ञान प्राप्त किया और बुद्ध बन गए।

प्राचीन काल में भी, यह जीवन के अर्थ की समझ थी जिसने अशोक को कलिंग युद्ध के बाद धम्म- प्रेम और करुणा की नीति का पालन करने के लिए मजबूर किया।

वर्तमान समय में, यह जीवन का ही अर्थ है जिसने हमारे देश के महापुरुषों जैसे महात्मा गांधी, भगत सिंह, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को अपने परिवार को छोड़, पूरी भक्ति के साथ देश की सेवा करने के लिए प्रेरित किया। यह सिर्फ इसलिए हो पाया, क्योंकि ये सभी लोग अपने अस्तित्व और होने के कारण पर सवाल उठाने के लिए पर्याप्त चिंतनशील थे। उन्होंने सवाल किया – मैं क्यों मौजूद हूँ? मैं किस लिए जी रहा हूँ? इतनी नफरत, विनाश वाली दुनिया में, क्या मेरे पास जीने का कोई कारण है? वर्तमान स्थिति में, यदि हम ये प्रश्न स्वयं से पूछें, तो निश्चित रूप से हम एक उत्तर तक पहुंचेंगे और अपने जीवन को अपने इच्छित उद्देश्य के साथ जीने में अधिक संतुष्ट हो पाएंगे।

जीवन का कोई एकवचन अर्थ नहीं है। हम जिस तरह से सवाल पूछते हैं, उसके आधार पर जीवन सभी के लिए अलग होता है। वे लोग जिनके पास क्यों जीना है का उत्तर है, वे लगभग किसी भी परेशानी से निकल कर आगे बढ़ सकते हैं। इसके लिए बस एक जुनून, सही दृष्टिकोण और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। जीवन के दर्शन को परिभाषित करने की प्रक्रिया एक जहाज बनाने के समान है। जहाज आपको कठिन यात्रा पर भी ले जाएगा और सुखद मौसम में आसानी से तैरेगा भी। यह कहा जा सकता है कि जीवन दुखों, हँसी, सीखने आदि का जटिल मिश्रण है।

जीवन में कुछ भी निःशुल्क नहीं मिलता है, यह हम ही हैं जिन्हें इसे कड़ी मेहनत और समर्पण के माध्यम से अर्जित करना पड़ता है। हमें ही जीवन के अर्थ का निर्माण करना है, न कि उसकी खोज करनी है। जीवन का अर्थ किसी के लिए कुछ भी हो सकता है। कुछ लोगों को परोपकार के काम में अर्थ मिल सकता है और कैलाश सत्यार्थी बन सकते हैं या अन्य लोग यह अर्थ पैसा कमाकर बिल गेट्स बनने में पा सकते हैं। यही वह अर्थ है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में सैनिकों को सीमाओं पर सेवा करने का आह्वान करता है। परिस्थिति कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हो, यदि आपने जीवन का अर्थ ढूंढ लिया है, तो इन कठिनाइयों पर काबू पा ही लिया जाता है।

अक्सर मेहनत की कमाई और सही चीजें एक जैसी ही होती हैं। और बिना किए पछताने के बजाय, कुछ करने के बाद पछताना बेहतर है। संभावनाएं अनंत हैं। आपका लक्ष्य आपको नई चीजों का अनुभव करने, नई चीजें सीखने के लिए प्रेरित करता है। अगर आप असफल होते हैं तो भी आपको अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने का अनुभव मिलता है। एक बार ठान लेने के बाद समाज के बारे में नहीं सोचना चाहिए।

यह होना चाहिए कि–

मैं इसे करूंगा क्योंकि मैं इसे करना चाहता हूं। – इसे सरल रखें।

कबीर दास, मीराबाई जैसे संतों ने अध्यात्म में जीवन का अर्थ पाया। मीराबाई के लिए, यह श्रीकृष्ण के लिए भक्ति थी जिसने उनको एक बड़े राजपूत साम्राज्य से वृंदावन की गलियों / मंदिरों तक खींच लिया। इस अर्थ में उन्हें अपने पति/राज्य के विरुद्ध जाने का साहस मिला।

साथ ही भारत का संविधान हमें अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग करने और अपने अस्तित्व को दिखाने के लिए मौलिक अधिकार निर्देशक सिद्धांत प्रदान करता है। लेकिन यह बोझ बड़ी जिम्मेदारी के साथ आता है। हमारे कार्यों के जो भी परिणाम होते हैं, हमें उसे स्वीकार करना चाहिए। यह केवल हमारे कार्य हैं जो हमें कुछ भी हासिल करने में मदद कर सकते हैं जो हम चाहते हैं। यह नेल्सन मंडेला की कार्रवाई थी जिसने अफ्रीका के लोगों को आजादी दिलाई, भले ही उन्हें 27 साल जेल में बिताने पड़े।

समाज में जो हो रहा है उसकी जिम्मेदारी किसी को तो लेनी पड़ेगी, यह किसी के भी जीवन को एक अर्थ देता है। कोई बड़ी इमारत, ट्रेन और हवाई जहाज बनाने के लिए पर्याप्त रचनात्मक हो सकता है। जैसा कि अब्दुल कलाम ने कहा है:

रचनात्मकता, सोच की ओर ले जाती है, सोच ज्ञान की ओर ले जाती है, और ज्ञान आपको महान बनाता है।

आप महान तब बनते हैं, जब आपने जीवन में वह हासिल कर लिया है जो आप चाहते हैं। यह आपके जीवन के उद्देश्य को पूरा करता है और आपको संतुलित बनाता है।

जैसा कि गांधी जी ने कहा है:

खुद को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप खुद को दूसरों की सेवा में छोड़ दें।

यह मुझे बृहदारण्य उपनिषद के संस्कृत मंत्र की याद दिलाता है:

तमसो मा ज्योर्तिगमय

जैसे दूसरों की सेवा हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है।

दूसरों की इस सेवा ने कैलाश सत्यार्थी जैसे लोगों को नोबेल पुरस्कार दिलाया।

यह महसूस करना कि हमारे जीवन को क्या अर्थ दिया जाना चाहिए, हमारे जीवन में अपार खुशी और संतुष्टि लाता है। खुशी तब होती है, जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं, जो करते हैं, वह सब सामंजस्य में होने लगे। कुछ लोगों के कहने/सोचने/करने में कोई तालमेल नहीं होता। इससे और दिक्कतें पैदा होती हैं। यह उन्हें अनजान और भ्रमित करता है। साथ ही दूसरों का आंख मूंदकर अनुसरण करने से हम अपना भला नहीं कर रहे हैं। हमारे जीवन को अर्थ देना हमारा व्यक्तिगत अर्थ देना है, न कि सामूहिक अर्थ। सबसे अच्छी चीज जो हम अपने लिए कर सकते हैं, वह है अपनी सहज मान्यताओं और इच्छाओं के अनुसार जीना। यह हमारे भाग्य को पूरी तरह से हमारे हाथों में रखता है। दयालु या क्रूर, सार्थक या व्यर्थ, मज़ेदार या उबाऊ, आपका जीवन वही है जो आप इसे बनाते हैं।

जैसा कि विक्टर ई. फ्रेंकल ने ठीक ही कहा है– जीवन का अर्थ ही,जीवन को एक अर्थ देना है।

यह विश्लेषण आपके कई सवालों का जवाब देगा और आप पहचान पाएंगे कि :–

आपके लिए महत्वपूर्ण और सार्थक क्या है ?

क्या आपने अपने जीवन में आनंद पाया है ?

आप अपने जीवनकाल में किस व्यक्तित्व के लिए खड़े रहना चाहेंगे और याद किए जाएंगे ?

❑ ❑ ❑

संकल्प आजादी की रक्षा का

श्री राजेश कुमार कटरे
वरिष्ठ अनुवादक

अपने ही देश के स्पात की जंजीरों से हम जकड़े थे,
कुछ समझ ना पाये व्यापार में हम धोखा खाये थे
जो धरती पर जन्में वीर,
उनकी शहादतों पर शीश झुकाते हैं।
हम भी पहनें चोला क्रांति का
ये अरमान दिल में रखते हैं ।। 1 ।।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत अखण्ड है,
बाँटने बढ़ें कदम कोई तो हम कटार तैयार रखते हैं ।
हम भी पहनें चोला क्रांति का,
ये अरमान दिल में रखते हैं।। 2 ।।

क़ाफिर कोई इंसानी भावनाओं से खेले तो,
हमारे हृदय में स्पंदन नहीं शोले भड़कने लगते हैं।
हम भी पहनें चोला क्रांति का,
ये अरमान दिल में रखते हैं ।। 3 ।।

उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक,
माँ भारती का केसरिया परिधान है ।
स्वर्ग-सी इस धरा पर खेत उन्मुक्त लहराते हैं,
अगर सुखाने की नीयत हो इस हरियाली को,
उस धूप पर हम घटा बनके छा जाते हैं।
हम भी पहनें चोला क्रांति का,
ये अरमान दिल में रखते हैं ।। 4 ।।

जुर्म से प्रताड़ित सैनिकों की चींखे करती सतर्क हैं
हिंदुस्तानियों के दिलों पर उनकी तड़प देती दस्तक हैं
हमारी आदत-ए-कुर्बानी और जुनून-ए-सरफरोशी है
बस, न तिथि न मुहूर्त हो मुकर्रर
निर्बाध है मकसद, स्वतन्त्रता के खातिर
सभी क्रूरतापूर्ण अभियोजन के नियोजन का
हम संकल्प लेते हैं।
हम भी पहनें चोला क्रांति का,
ये अरमान दिल में रखते हैं ।। 5 ।।

भले ये राहें हों शहादत की प्यासी,
हों लहू से सुशोभित क्यों न,
रक्षा परंपरा के वाहक हम,
मर-मर के भी न मिटते हैं।
हम भी पहनें चोला क्रांति का,
ये अरमान दिल में रखते हैं ।। 6 ।।

इस पावन वसुंधरा की सेवा में हम तोपें ताने बैठे हैं।
जब अणु बम का ख़ौफ दिखा कर,
दुशमन कोई मौका ताकते हैं,
तब कड़ी कोई कमजोर नहीं यहाँ,
कुर्बानी हम तलाशते हैं।
हम भी पहनें चोला क्रांति का
ये अरमान दिल में रखते हैं ।। 7 ।।

❑ ❑ ❑

पुस्तकों की अद्भुत दुनिया

श्री वसीम मिन्हास
हिंदी अधिकारी

''किताबों ने कहा हमें पढ़ो ताकि तुम्हारे भीतर चीज़ों को बदलने की बेचैनी पैदा हो सके''
– मंगलेश डबराल

मनुष्य के जीवन-विचार, देश-दुनिया तथा समाज में रूपान्तरण की अद्वितीय क्षमता पुस्तकों में होती है । यह शत प्रतिशत सत्य है कि पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी मित्र होती हैं । एक अच्छे और सच्चे मित्र की भाँति पुस्तकें हमें विवेकवान कर न सिर्फ सही-गलत के पहचान की दृष्टि प्रदान करती हैं अपितु जीवन के अच्छे बुरे-समय में हमारे एकान्त की सहयात्री बन हमें भावनात्मक संबल भी देती हैं । इनकी बहुत बड़ी खासियत है कि ये हमसे बिना किसी प्रत्याशा के हमारी वैचारिकी को सदैव सम्पन्न ही बनाती हैं । हमारे अन्दर मानवीय गुणों की प्राण-प्रतिष्ठा करने के साथ ही क्रमशः उन्हें विकासोन्मुख बनाए रखने की दिशा में क्रियाशील रहती हैं । जिस प्रकार संतुलित आहार के बिना समुचित ढंग से शारीरिक विकास नहीं हो सकता, उसी प्रकार मानसिक विकास के निमित्त पुस्तकों की महत्ता अक्षुण्य है । निर्विवाद रूप से पुस्तकें मस्तिष्क के व्यायाम का सर्वोतम माध्यम हैं। नियमित तौर पर इनके अध्ययन से हमारे सामान्य ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती है, साथ ही हमारी आत्मशुद्धि तथा आत्मपरिष्कार भी होता रहता है । पुस्तकें एकाग्रता और ध्यान में सुधार लाती हैं , जिससे नकारात्मक विचार तथा गर्हित भावनाओं का सर्वांशतः शमन किया जा सकता है।

पुस्तकें ज्ञान की अथाह एवं अक्षय भंडार होती हैं । पुस्तकों की दुनिया बड़ी ही अद्‌भुत-अनन्त है । इनके ओर-छोर को कभी मापा-तौला नहीं जा सकता; और न ही संसार का कोई भी व्यक्ति इस दुनिया के सर्वरूपेण परिक्रमा का दावा कर सकता है । हाँ इतना अवश्य है कि इसमें प्रवेश कर जाने के पश्चात हमें असीम शान्ति और परमानंद की प्राप्ति होती है । इस दुनिया में ज्ञान की निर्मल धारा सतत् प्रवाहमान रहती है। ज्ञान के समान पवित्र कोई अन्य वस्तु नहीं है, किन्तु इसकी निर्मलता एवं पवित्रता में पूर्णतः निमज्जित होने के लिए हमारा स्वाध्यायी होना प्रथम अनिवार्य शर्त है। पाठ्यक्रम की बाध्यताओं और सीमाओं से बाहर निकलकर ही इस दुनिया में स्वच्छन्द विचरण किया जा सकता है। इस हेतु आवश्यक है आजीवन स्वाध्यायी बने रहें। इतिहास साक्षी है कि देश-विदेश तमाम महान जन उन्नायक अपने समय के गहन स्वाध्यायी रहे हैं। उनमें उद्दात्त विचारों का प्रत्यारोपण पुस्तक प्रदत्त ज्ञान द्वारा ही हुआ है, जिसके बलबूते उन्होंने अपने संकल्प को पूरा किया तथा देश-समाज-राष्ट्र के उत्थान में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। तभी तो यह अकारण नहीं है कि इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में उनके नाम दर्ज हुए हैं और आज हम इन महापुरुषों के जीवन व आदर्शों को पुस्तकों के मार्फत ही जानते हैं । इस सन्दर्भ में हिन्दी साहित्य के प्रख्यात आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की चंद पंक्तियाँ उल्लेखित करना अप्रासंगिक न होगा : ''पुस्तकों के द्वारा हम किसी महापुरुष को जितना जान सकते हैं उतना उनके मित्र क्या पुत्र तक भी नहीं जान सकते।''

किन्तु इस तथ्य का उद्घाटन भी बेहद जरूरी है कि सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान से मनुष्य के विचारों में

बदलाव संभव नहीं है । जब तक पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान को हम अपने जीवन और व्यवहार में नहीं ढालते तब तक उसका महत्व व उद्देश्य साधित नहीं हो सकता। संत कबीरदास कहते हैं:

"पढ़ि- पढ़ि के पत्थर भये लिखि-लिखि भये जु ईट
कबीरा अन्तर प्रेम का लागी नेक न छींट।"

अर्थात पुस्तकीय ज्ञान यदि मानव हृदय में प्रेम, करुणा, दया, ममता, स्नेह, संवेदना नहीं उपजाते तो इनका कुछ भी औचित्य नहीं । इन भावों-मूल्यों के अभाव में पढ़ना-लिखना, ईंट-पत्थर की तरह जीवन रहित है । दुर्भाग्यपूर्ण है कि मौजूदा बाजारवादी समय में पुस्तकें ज्ञानार्जन के बजाय महज रोजगार पाने का जरिया भर बनकर रह गई हैं। यह ठीक है कि ज्ञान अथवा शिक्षा का रोजगारोन्मुखी होना बहुत जरूरी है लेकिन यह मानव जीवन की एकमात्र प्राथमिकता नहीं होनी चाहिए अन्यथा संसार मानव रूपी रोबोटों से पट जाएगा। मानवता पर मंडराते इस आसन्न संकट के प्रति आज सतर्कता, चैतन्यता एवं जागरूकता की परम आवश्यकता है। समग्रतः पुस्तकें सामाजिक परिवर्तन के सांस्कृतिक अस्त्र के रूप में बहुत कारगर तथा उपयोगी बन सकती हैं। अतःप्रयास इस दिशा में भी अपेक्षित है। पुस्तकें पढ़ना अपने व्यापक अर्थ में एक सुनहरा भविष्य गढ़ने के साथ-साथ, एक नैतिक मनुष्य और जिम्मेदार नागरिक गढ़ना भी है,तभी सही मायने में देश और समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर हो पायेगा। निःसंदेह पुस्तकों की महत्ता सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक है। इनके महत्व पर प्रकाश डालते हुए लोकमान्य तिलक क्या खूब लिखते हैं - "मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूंगा क्योंकि पुस्तकें जहाँ होंगी वहीं स्वर्ग आ जाएगा।"

❑ ❑ ❑

हकीकत

श्रीमती सुनीता भोपसे
व.ले.प.

यह हकीकत है ज़िंदगी की,
सच्चाई भी यही है,
जो बिछड़े थे कभी,
आज साथ भी वही है।
जिसने बेरंग की ज़िंदगी
आज रंगीन भी उनसे ही है।
जिन्होंने छिनी थी खुशी
आज ये मुस्कुराहट भी उनसे ही है।
ज़िंदगी के मायने बदल गए,
बदला है समय,
न बदली तो यह फितरत ही है।
जिसने दी भी तरक्की या कराया घाटा।
लेकिन यह ज़िंदगी से टूट न सका हमारा नाता।
याराना भले ही बहुत था और बहुत था भाईचारा
लेकिन ज़िंदगी की कसौटी में, टूट गया नाता हमारा।
आज भले ही अंधेरा है और दिख न रहा है सहारा
लेकिन यही है एक बड़ी मंज़िल को पाने का इशारा।
भले ही हो दरवाज़ा बंद साथ न दे कोई तुम्हारा
लेकिन तुम्हारी इस मंज़िल को पाने के रास्ते में रुकना नही है गंवारा।
यह हकीकत है ज़िंदगी की, सच्चाई भी यही है।

❑ ❑ ❑

आमची मुंबई

श्री गिर्राज प्रसाद मीना
वरिष्ठ अनुवादक
शाखा कार्यालय, मुंबई

भारत में यूं तो पर्यटन स्थल कई हैं। जैसे पहाड़ों से घिरे शहर, झरनों में बसा नगर आदि किंतु मायानगरी की बात ही निराली है। जी हाँ, आप समझ ही गए होंगे कि मैं किसकी बात कर रहा हूँ। चलिए इसकी खासियत से रूबरू करवाता हूँ। यह शहर छोटा द्वीप जैसा है, जिसके चारों ओर पानी नजर आता है। लोग अपनी किस्मत, प्रतिभा आजमाने यहां आते है जिससे वे शायद कभी निराश नहीं होते हैं। यह नगरी भौगोलिक तौर पर विशाल तो है, इसका हृदय भी उतना ही विशाल है, अर्थात बहुत अधिक जनसंख्या होने के बावजूद ये सभी का पालन पोषण करती है। यहां लोगों को पानी और बिजली की कमी शायद ही होती है। महाराष्ट्र अत्याधिक प्रगतिशील राज्य है जो तकनीक, प्रौद्योगिकी हमें 15-20 वर्ष बाद दूसरे शहरों में मिलती है वह यहां पहले ही मिल जाती है। यहां का मुख्य आकर्षण यहां की ऊंची-ऊंची इमारतें हैं। एकदम अगल-बगल में मकान होते हुए भी लोग खुशी से जीते हैं।

यहाँ की आकर्षक वास्तुकला, संस्कृति, पारंपरिक संरचना अलौकिक है। मुंबई की खासियत है कि यहां लोग जाति,पंथ, वित्तीय स्थिति पर ध्यान न देकर सभी को खुले दिल से स्वीकारते हैं और सभी को जीवंतता से भर देते हैं। वैसे देखा जाए तो यह शहर कई मामलों में सुरक्षित भी है क्योंकि यह शहर कभी सोता नहीं। रात में भी एक अलग महौल होता है जो महिलाओं के लिए भी सुरक्षित है। यहां पर बाढ़ आए या कोइ अन्य विपदा, लोग अपना हौंसला कभी नहीं खोते और एक दूसरे की पूर्ण रूप से मदद करते हैं।

यह शहर कला और रंगमंच का भी एक बड़ा केंद्र है। बड़े से लेकर छोट कलाकार तक यहां अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं, उन्हें एक मंच मिल ही जाता है। सबसे बड़ा उदाहरण तो बॉलीवुड ही है हमारे सामने। यहां पर हर धर्म के लोग एक साथ रहते हैं और हर त्यौहार को बड़े धूम-धाम से मनाते हैं। यहां के समुद्र मन को शांति प्रदान करते हैं। अरे! यहां की लोकल ट्रेन को हम कैसे भूल सकते हैं। यह किसी मनुष्य द्वारा किया गया बड़ा चमत्कार सा ही है। इस शहर के परिवहन का यह साधन यहां की जीवन रेखा समान है। ये ट्रेनें शहर के दूर-दराज के कोनों को इसके कॉर्पोरेट हब से जोड़ती हैं।

मुंबई जाओ और शॉपिंग के साथ स्ट्रीट फूड न हो तो कैसे चलेगा। यहां लोग खूब शॉपिंग करते हैं और साथ ही रोड साइड की दुकानों पर लगे चाट-बड़ा पाव, पावभाजी आदि का लुत्फ उठाते हैं।यहां झुग्गी बस्ती बहुत होते हुए भी प्रौद्योगिकी क्षेत्र में यह शहर आज भी अव्वल है। यहां के डब्बावालों को कौन नहीं जानता। आज ये डब्बेवाले पूरी दुनिया में मशहूर हैं। अधिक पढ़े-लिखे न होने के बावजूद भी इनका प्रबंधन अत्यंत सराहनीय है। इस सपनों की नगरी में लोगों की आस्था व श्रद्धा बनाए रखता है यहाँ का सिद्धी विनायक मंदिर, महालक्ष्मी मंदिर और हाजी अली दरगाह भी आस्था का एक बड़ा केंद्र हैं।

मैं बस ये कह सकता हूँ कि देश के अन्य भागों की जीवन पद्धति और मुंबई की जीवन पद्धति में हम स्पष्ट रूप से अंतर देख सकते हैं। यहां की हवा में दोस्ती की एक अंतर्निहित भावना है जो सभी का मन मोह लेती है। मुंबई भारत का अद्वितीय शहर है। यहां यात्रा करना सस्ता, पर्याप्त और सुविधाजनक है और व्यावहारिक रूप से हर स्थान पर मदद उपलब्ध है।

तो आप भी एक बार अवश्य आइए इस सपनों की नगरी में..........।

❑ ❑ ❑

तकनीकी

श्री मिथिलेश कुमार साह
डी.ई.ओ.

तकनीकी का उपयोग मानव के समस्यों के समाधान के लिए और काम को आसान बनाने के लिए किया गया है। जिसमें औज़ार और संसाधनों का इस्तेमाल किया जाता है। तकनीक की सहायता से हम हर वो काम करने में सक्षम रहते हैं जो हमारे लिए बेहद जरूरी है।

वर्तमान में तकनीक का दायरा काफी बढ़ चुका है। विश्व के हर देश, राज्य तथा शहर, यहाँ तक की छोटे से छोटे गाँव में भी तकनीक का दायरा बढ़ चुका है।

तकनीक की वजह से आज शिक्षा, चिकित्सा, रक्षा, विज्ञान, यात्रा, व्यापार, संचार, मनोरंजन इत्यादि में क्रांति आ गई है। तकनीकी के कारण कोई भी कार्य हम आसानी से कर लेते हैं। हम अपने दैनिक जीवन में भी बहुत ही ज्यादा तकनीकी का उपयोग करते हैं, जैसे- मोबाईल, कम्प्युटर, मशीन, टीवी, गाड़ी का इंजन, गाड़ी, घड़ी इत्यादि। यहाँ तक कि यदि हम कोई भी कार्य करते भी हैं तो कहते हैं टेक्निक से करो जल्दी और आसानी से हो जाएगा जैसे-पढ़ाई। अभी के समय में जो देश जितना तकनीकी का विकास करता है उस देश को उतना ही विकसित माना जाता है।

तकनीकी के जितने फायदे हैं उतने ही ज्यादा नुकसान हैं। तकनीकी के कारण पर्यावरण बहुत ज्यादा ही प्रदूषित हो रहा है। जिसके कारण पर्यावरण परिवर्तन हो रहा है और हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव हो रहा है। हम तकनीकी पर इतना निर्भर हो गये हैं कि इसके बिना बहुत से लोगों का जीना दुर्लभ हो जाएगा। अधिकतर मोबाइल, कम्प्युटर, टेलीविज़न के कारण लोग बहुत से समय वैसे बर्बाद कर देते हैं। इसके लत के कारण बहुत से युवा अपना कैरियर बर्बाद कर लेते हैं। लोग परिवार में भी एक दूसरे से सही से बात नहीं कर पाते हैं, साथ में बैठे रहने पर भी लोग मोबाइल का ही इस्तेमाल करते हैं जिसके कारण आज मानव एक दूसरे का ध्यान कम रखते हैं और मोबाइल पर ज्यादा ध्यान देते हैं जिससे आज मानव को तरह-तरह की परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। तकनीकी के उपयोग के कारण मानव शारीरिक श्रम भी नहीं कर पाते हैं जिससे शरीर भी फिट नहीं रह पाता और तरह-तरह की बीमारी से ग्रसित हो जाते हैं।

अत: तकनीकी का उपयोग हमें जहां जरूरी हो और जितना मात्रा में हो उतना ही करना चाहिए नहीं तो यह व्यक्ति के लिए घातक एवं परेशानी का कारण बन जाएगी।

❑ ❑ ❑

वसीयत / बँटवारा

श्री के. के. पाण्डेय
स.ले.प.अ.

एक व्यक्ति ने अपनी वसीयत इस प्रकार बनायी कि उसके मरने के पश्चात उसकी सम्पत्ति का आधा (1/2) हिस्सा बड़े बेटे को, चौथाई (1/4) हिस्सा छोटे बेटे को तथा पाँचवा (1/5) हिस्सा बेटी को मिले।

उस व्यक्ति के मरने के बाद वसीयत के अनुसार सम्पत्ति के बँटवारे की बात आयी। समाज के बड़े लोग इकट्ठा हुए और पता चला कि उस व्यक्ति की सम्पत्ति के नाम पर कुल उन्नीस ((19) घोड़े हैं। अब इन उन्नीस घोड़ों को वसीयत के अनुसार बाँटने में समस्या स्वाभाविक ही समझी जा सकती है। बड़े माननीय बोले कि इन घोड़ों को बेचकर जो पैसा मिले उसे बाँट दिया जाये। परन्तु बच्चे (बेटे व बेटी) ऐसा करने के लिए नहीं माने।

इस दौरान वहाँ एक घुड़सवार आया और स्थिति की जानकारी के बाद बोला कि वसीयत बनाने वाला व्यक्ति उसका मित्र था, तथा उस मित्र ने घुड़सवार को एक घोड़ा उधार दिया था। अतः वह घोड़ा भी मिलाकर बँटवारा कर दिया जाये।

इस प्रकार कुल घोंड़ों की संख्या बीस (19+1) हो गयी। फिर बँटवारा प्रारम्भ हो गया। बीस का आधा (20/2) अर्थात 10 (दस) घोड़े बड़े बेटे को मिल गया । बीस का चौथाई (20/4) अर्थात पाँच (05) घोड़े छोटे बेटे को मिला। तदनन्तर बीस का पाँचवा (20/5) हिस्सा अर्थात चार (04) घोड़े बेटी को मिल गया। इस प्रकार कुल 10 + 5 + 4 = 19 घोड़ों का बँटवारा बच्चों में हो गया। शेष बचे घोड़े के बारे में घुड़सवार ने कहा यह मेरा घोड़ा मैं लेकर जा रहा हूँ, क्योंकि वसीयत के हिसाब से बँटवारे के बाद मेरा घोड़ा बच रहा है।

इस बँटवारे की कहानी से वसीयत व उसके अनुपालन संबंधित विचार का हास्य मनोरंजन पूर्ण अभिव्यक्ति का आनन्द लिया जा सकता है।

❑ ❑ ❑

प्लास्टिक की दुनिया

श्रीमती प्रियंका कुमारी
एम.टी.एस.

संसार में सभी पदार्थ प्रकृति की देन हैं। उन्हें मानव ने उसी अवस्था में ग्रहण किया है। उन्हीं के द्वारा प्रकृति का यह चक्र गतिशील रहता है। कुछ पदार्थ जो मनुष्य द्वारा निर्मित हैं, उनमें प्लास्टिक एक है, जो आजकल पर्यावरण के लिए चिंता का कारण बना हुआ है। प्लास्टिक के आविष्कारए ने दुनिया को रंग-बिरंगा और आकर्षक बना दिया है। घर का सारा फर्नीचर, वाहन, खिलौने, दरवाजे सब पर प्लास्टिक ने अपना साम्राज्य स्थापित कर दिया है। एक भी ऐसा घर नहीं मिलेगा जहाँ प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का उपयोग न होता हो। पहले कागज और कपड़े का उपयोग होता था। कागज और कपड़े का लिफाफा चाहे-अनचाहे फट जाता था। परंतु प्लास्टिक के आ जाने से मानव जीवन सुखद हो गया है। तरल पदार्थ से लेकर भारी भरकम समानों की पैकिंग प्लास्टिक से बने थैले थैलियों में होने लगी है। यह सुविधाजनक साधन है पर इसका सबसे बड़ा दोष यह है कि यह घुलनशील नहीं है। यदि इसके बड़े दोष का निवारण हो जाता है तो इसका उपयोग वरदान प्रमाणित हो सकता था। सरकार ने इसके प्रयोग पर प्रतिबंध लगाया है। फिर भी आम जनता अपनी सुविधा हेतु इसका इस्तेमाल कर रही है। कागज व कपड़े के बैग का प्रयोग वर्तमान पीढ़ी नहीं करना चाहती। सरकार ने प्लास्टिक की थैली का प्रयोग करने वालों पर जुर्माना करने का निर्णय भी लिया है। जनता को सरकार के इस निर्णय का अनुपालन करना चाहिए तथा हम सभी को पर्यावरण के बारे में सोचते हुए प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करनी चाहिए।

❑ ❑ ❑

हिन्दी भाषा वर्ग-पहेली

श्रीमती नीरजा टंडन
स.ले.प.अ.

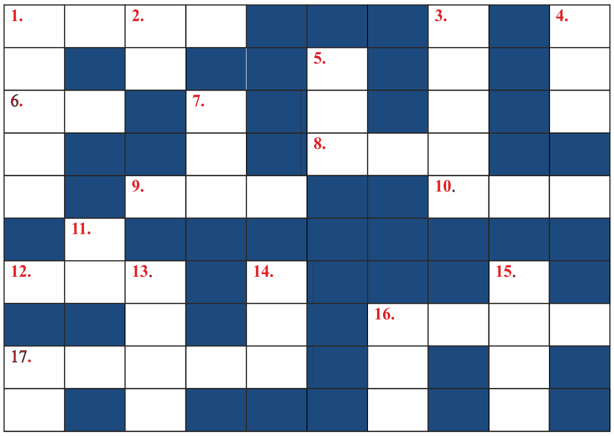

संकेत– बाएँ से दाएँ

1. संस्कृत भाषा को इस नाम से भी जाना जाता है ।
2. जिस राज्य में नागामी भाषा बोली जाती है, उस राज्य की एक प्रमुख जनजाति।
3. इस भाषा को द्रविड़ परिवार की सभी भाषाओं की जननी कहा जाता है ।
4. संविधान की आठवीं अनुसूची में मूलतः इतनी भाषाएँ शामिल थीं।
5. महाराष्ट्र की राजभाषा।
6. असमिया भाषा इस राज्य की आधिकारिक भाषा है।
7. इस राज्य की दो आधिकारिक भाषाएं तेलुगू और उर्दू हैं।
8. इस राज्य में संस्कृत भाषा को राज्य की द्वितीय राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है ।

संकेत– ऊपर से नीचे

1. हिन्दी भाषा की लिपि।
2. वह साधन, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है।
3. यह एक भाषा का नाम, उल्टा सीधा एक समान।
4. गोवा राज्य की आधिकारिक भाषा ।
5. चिन्नी-तिब्बती भाषा समूह की भाषाओं को बोलने को यह कहा जाता है ।
6. ऑस्ट्रिक भाषा समूह की भाषाओं को बोलने वालों को यह कहा जाता है ।
7. इस देश की भाषा आमतौर पर पुडुचेरी में बोली जाती है।
8. महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविध्यालय, इस राज्य में स्थित है।
9. कर्नाटक की राजभाषा
10. इस उत्तर पूर्वी राज्य की आधिकारिक भाषा अंग्रेज़ी है ।
11. एक भारतीय भाषा है जिसे इटैलियन ऑफ द ईस्ट कहा जाता है।
12. मुगल काल में इस भाषा को रेख़्ता कहा गया है ।

आज़ादी के 75 साल का हाल

श्रीमती किरन देवी
एम.टी.एस.

जिस आज़ाद भारत में हम आज साँस ले रहे है, इसको आज़ाद कराने के लिए कितने स्वतंत्रता सेनानियों व देश प्रेमियों ने अपने प्राणों की आहूति दी है। 3.24 मिलियन किलोमीटर वर्ग क्षेत्र व लगभग 130 करोड़ जनसंख्या वाले भारत देश ने आज़ादी के 75 वर्षो में कई क्षेत्रों में अपना परचम लहराया है।

15 अगस्त 1947 को हम आज़ाद हुए। देश ने अपनी तरक्की की ओर कदम बढ़ाते हुए, 1965 में हरित क्रांति की शुरुआत से अनाज भंडार में वृद्धि तथा 1992 में निजीकरण, उदारीकरण, वैश्वीकरण के साथ अर्थव्यवस्था में वृद्धि देखी। आज देश की सैन्य शक्ति विश्व में चौथी स्थान पर है। आज शहरों के जैसे गाँव भी सड़क, बिजली, पानी, इंटरनेट आदि सुविधाओं से सुसज्जित हो रहा है।

यदि देश के पास गर्व करने के लिए उपलब्धियां है, तो अफसोस जताने के लिए वजह भी हैं। देश में दहेज प्रथा, बाल-विवाह, बालश्रम, भ्रष्टचार, बलिका भ्रूण हत्या, आंतकवाद, सम्प्रदायवाद, लिंग भेद आदि बुराईयां अभी भी व्याप्त हैं। देश में बढ़ती जनसंख्या की वजह से भूखमरी, बेरोजगारी, प्रदूषण, संसाधनों की कमी, हिंसा आदि समस्याएँ अपना सिर दिन प्रतिदिन उठा रही हैं। देश की आज़ादी को और ज्यादा सफल बनाने के लिए हमें देश में व्याप्त इन बुराइयों को खत्म करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए तथा देश को और ज्यादा समृद्ध बनाने के लिए अथक प्रयास करना चाहिए। जैसा कि गांधीजी ने कहा था कि -

''जो परिवर्तन आप देखना चाहते हैं, उसका आरम्भ खुद से करें।''

❑❑❑

लॉक डॉउन

श्री रवि प्रिंस
एम.टी.एस.

जब कभी ये लॉकडॉउन खुलेगा,
हम बदल जाएंगे, सब बदल जाएगा।।
जब मिलोगे न कभी,
न मिलाएंगे हम हाथ।
रख के दो फुट दूरी भी कर लेंगे बात,
मुंह को ढकने की आदत सी-पड़ जाएगी।
बात आंखो से होगी, वही मुस्कुराएगी।।

इतना मुश्किल नहीं, है ये छोटी सी बात,
हम संभल जाएंगे, मातम थम जाएगा।

ये बंदिश का मौसम जब गुज़र जाएगा,
लोग मुंह पर ना छिकेंगे अब फिर कभी।
सर्दी खांसी भी क्राईम सा हो जाएगा।
जिसको जान है प्यारी वो सुधार जाएगा।।

जब कभी ये लॉकडॉउन खुलेगा,
हम बदल जाएंगे, सब बदल जाएगा।।

फिर भी गुजरा वो दौर, अकसर याद आएगा।
रखके कँधों पे यारों के हाथ, करना सैर-सपाटा
याद आने पर थोड़ा तो सताएगा।

मेले की भीड़ में थाम के चलना उसका हाथ,
याद आते ही लबों पे थोड़ी मुस्कुराहट दे जाएगा।

त्यौहारों में बेपरवाह खोके, प्यार से गले न मिल पाना
थोड़ा इस दिल को तो अखर जाएगा।
हां, बदल जायेंगे हम सब बदल जाएगा,
पर क्या कभी लौट के वो दौर फिर वापस आएगा ?

❑❑❑

गुरुवर की यादें

श्री अभिलेख कुमार निराला
एम.टी.एस.

आज जब खाना खाने बैठा ही था कि सहसा हाथ में मोबाईल उठा लिया उसमें देखा कि किसी ने अपने यादों की डायरी से कुछ अनुभव साझा किए थे, स्कूल के दिनों की जिनमें, वे कुछ अपनी आदतों, फिर उन आदतों से परेशान माँ, फिर एक शिक्षक जिनसे वह ट्यूशन लेता था, शामिल थे।

उनकी यह कहानी सुनकर मेरे जहन में भी उस गुरुवर की यादें ताजा हो गई। जो वे ज्ञान देकर गए, जीवन में आज भी इनका प्रकाश प्रज्ज्वलित हो रहा है।

जब भी उनको देखता था प्रेरणा से ओतप्रोत हो जाता था, वे प्रेरणा के जीते जागते यथार्थ थे।

जिनका अभाव मुझे तब हुआ जब वे इस संसार में अपना ज्ञान रुपी प्रकाश हम जैसे कितने विद्यार्थियों में समाहित कर हम सब को अलविदा कह इस संसार से उस परमात्मा के परलौकिक धाम को पधार गये।

उनके दिये हुए ज्ञान रुपी प्रकाश से आज मैं ही नहीं, मेरे जैसे कितनो के जीवन आज भी प्रकाशित हो रहे हैं। उनका मूल नाम मुझे स्मरण नहीं हो रहा, जब मैं यह लिख रहा हूँ किन्तु मैं अपने सहपाठी से उनका मूल पूछा वैसे उनकी उनके मूल नाम से बहुत ही कम विद्यार्थी जानते थे, किन्तु सभी उन्हें प्यार से और आदर भाव से ''बुढ़े बाबा'' के नाम से जानते थे उनसे यह इसलिए था क्योंकि हमेशा अक्सर उपनाम से हर व्यक्ति को किसी न किसी रुप में जाना ही जाता है। उनका यह उपनाम इसलिए था क्योंकि वे हमेशा धोती और कुर्ता ही धारण करते थे जब वो मेरे स्कूल ''महादेव शिशु निकेतन'' में आये थे तब मैं तीसरी कक्षा में था। समय बीत रहा था और साथ ही साथ गुरु और शिष्य का संबंध भी प्रगाढ़ होता जा रहा था।

मैं उनकी पढ़ाने की शैली से काफी प्रभावित था, मैं क्या सभी जन। उनकी समयबद्धता और शिक्षा प्रदान करने की पद्धति अनूठी थी। जो वे पढ़ाते थे उन्हें मौखिक याद भी करा देते थे।

उनकी शिक्षा प्रदान करने की पद्धति को देखते हुए प्राधानाचार्य ने बच्चों के लिए अंतिम समय की कक्षा, मतलब छुट्टी होने के समय से पहले का कक्षा उनको दिया। वे बोल-बोलकर पढ़ाते थे। जैसे पहाड़ा-खोड़ा, ककहरा, सीधी गिनती, उल्टी गिनती, सप्ताह के दिनों के नाम, महीनों के नाम, हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों माध्यम में प्रार्थना, कविता, अंग्रेजी शब्दों के मतलब जैसे कि APPLE, ELEPHANT, UMBRELLA इत्यादि। यहाँ पर कुछ पाठकों को परेशानी हो सकती है कि पहाड़ा-खोड़ा, ककहरा क्या है, हालाँकि वे पाठक पहाड़ा-खोड़ा, ककहरा से भलीभांति परिचित होंगे जो बिहार, झारखंड एवं उत्तर प्रदेश आदि से संबंध रखते हैं। क्योंकि यह किसी विशेष क्षेत्र के शब्द हो सकते हैं जो आपके जहन में भी कभी आ रहा होगा, और आप मंद-मंद मुस्कुरा रहें होंगे उन्हें याद कर। पहाड़ा-खोड़ा मतबल Table होता है जिसे हम सब बचपन में पढ़ते हैं। वन वनजा वन 1 x 1 = 1, टू वनजा टू 2 x 1 = 2 इत्यादि

ककहरा मतलब क, ख, ग .....
य, र, ल, व ...ज।
अ, आ, इ, ई ... अः।
क, का कि की ... इत्यादि

गुरुजी बच्चों को जोर से बोलकर एवं बच्चे भी उनके पीछे-पीछे उनसे भी जोरदार आवाज में बोलकर गुरुवर का अनुसरण करते हुए पढ़ाई करते थे। ध्वनि इतनी तेज होती थी कि सड़क पे चलते हुए भी कोई व्यक्ति इन आवजों को स्पष्ट सुन और समझ सकते थे तो फिर मैं तो बाजू वाली ही कक्षा में रहता था।

मतलब कि टेबल से संबंधित गुणा और भाग मौखिक ही याद हो जाते थे, उनकी पूछने की शैली कुछ इस प्रकार थी बताओ उन्नीस पच्चे कितना होगा। (19 x 5 = 95) बीस छका कितना होगा (20 x 6 = 120), सताईस तीया कितना होगा (27 x 3 = 81) इत्यादि। अगर इसके विपरीत पूछे तो भाग पद्धति में सहायक होता था।

इसके अलावा वे वैदिक गणित के भी जानकार थे, देढ़, ढाई, पौने ... मतलब। ($\frac{1}{2}, \frac{5}{2}, \frac{3}{4}, \frac{1}{3}, \frac{1}{6}$....) इत्यादि की गुणनफल उनको जुबानी ही याद थी। उनकी सबसे अनूठी बात थी कि उन्हें पूरा ''रामायण'' दोहे के साथ याद था। कुछ पाठकों को आपत्ति हो सकती है कि इसमें अनूठी जैसी क्या बात है, तो मैं बताना चाहूँगा कि उनके लिए उन्होंने कोई पुस्तक या ग्रंथ नहीं पढ़ी थी बल्कि सत्संगों में श्रवणकर पूरी याद की थी, जैसे कि आज से हजारों सालों पहले या और भी पहले के गुरुकुल की शिक्षा पद्धति हुआ करती थी।

गुरुजी वृक्ष के चबूतरों के नीचे थोड़ी से ऊँचे स्थान पर और सारे शिष्य उनके समक्ष, जो वे बोलते थे श्रवण कर ही ज्ञान आत्मसात करते थे।

हम सब में जो जिज्ञासु थे ''रामायण'' सुनने के वे उनके पास जाते थे मध्यान्त काल में ।

हम सब मध्यान्तर के समय तेजी से भागकर घर जाते थे, जो महज 100-200 मीटर की दूरी पर ही है स्कूल से और तुरंत खाकर वापस आ जाते थे, कभी गुरु जी अपना भोजन समाप्त कर चुके होते थे तो कभी भोजन करते हुए मिल जाते थे और फिर शुरु होती थी ''मौखिक रामायण'' अध्याय। साथ ही साथ दोहा जो वे गाकर सुनाते थे और यह प्रत्येक दिन चलता रहता था, कभी-कभी प्राधानाचार्य जी भी आकर सुनते थे। जब भी प्राधानाचार्य जी कक्षा शुरू होने के पहले आ जाते थे, वे भी कुर्सी पकड़कर गुरु जी के नजरों से ओझल होकर सुनते थे ताकि शिक्षक और प्राधानाचार्य के शिष्टाचार को कभी ठेस न लगे, इसका भी वह खूब ध्यान रखते थे।

उनका जीवन भी सादगी में गुजरा जहाँ तक मुझे स्मरण है उनके पास भी बहुत सीमित धोती और कुर्ते थे।

विद्यालय में कोई उत्सव हो जैसे : स्वतंत्रता दिवस, सरस्वती पूजा ... उनमें भी वह कोई रंगीन वस्त्र पहनकर नहीं आते थे। हाँ थोड़ी-सी नील की मात्रा अधिक होती और कुर्ते पर नजर जरुर जाती थी।

उनका भी जीवन मुश्किलों, बाधाओं और परेशानियों से भरा था। वे हर रोज विद्यालय बच्चों को पढ़ाने के लिए चालीस-पचास कि.मी. दूर से आते थे। उनका घर राजगीर के पास किसी गाँव में और विद्यालय बिहारशरीफ में था।

परिस्थितियाँ कैसी भी हो विद्यालय जरुर आते थे, वर्षा हो, धूप हो, ठंडा हो या तपिस उनके चक्षु मंडलों में भी शिकंज नजर नहीं आती थी, सदैव वे मुस्कुराते रहते थे।

इसलिए तो मैं कहता था कि वे प्रेरणा के जीवंत उदाहरण थे, जब भी उनको देखता था, प्रेरणा से ओतप्रोत हो जाता था।

एक तो उम्र का तकाजा, दूसरी उनकी आर्थिक तंगी उन्हें कमजोर कर गई, बाद में वे परमधाम को पधार गये। आज कितनी भी कोशिश कर लूँ गुरुवर नहीं आ सकते, मेरे पास उनकी यादें हैं। किसी ने सच ही कहा है, ''ज़िंदगी के सफर में गुजर जाते हैं जो मुकाम, वो फिर नहीं आते, वो फिर नहीं आते।''

उस दिन भी मेरी आँखें भर आई थी जब सुना था कि वे अब नहीं रहे ... और आज भी मेरे नयन सावन-भादो हो रहे हैं, वे मुझे हमेशा याद रहेंगे।

❑ ❑ ❑

75 वर्ष बाद ...

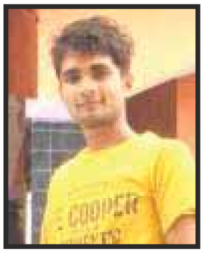

श्री किशन चतुर्वेदी
भाई, सुश्री नीलम देवी,
कनिष्ठ अनुवादक

जिंदगी की तमाम मुश्किलों को झेलते हुए बूढ़े होते कन्धों पर जिम्मेदारियों का बोझ ढोते हुए, रमेश हर शाम मंदिर की चौखट पर बैठकर अपनी गायों को निहारता हुआ डबडबायी आँखों से देश के आजाद होने की एक काल्पनिक तस्वीर उकेर लेता था। क्या सच में ऐसा दिन आयेगा जब इन क्रूर अंग्रेजों के चंगुल से हम आजाद हो सकेंगे। जब हमारे देश में हमारे अनुसार हमारे हित की सरकार होगी, जब हमारे बच्चे सड़क पर बेपरवाह खेल सकेंगे, दौड़ सकेंगे और स्कूलों में जा सकेंगे, क्या आयेगी ऐसी शाम जब हमारे घरों की महिलाएँ बिना डर, भय के पनघट पर जायेंगी? जब हमारे गावों में बिना दहशत के हँसी ठहाकों की गूंज होगी, जहाँ बुजुर्गों की चौपालें लगा करेंगी, इन तमाम सपनो से भरी हुई रमेश की नम आंखें तब खुली, जब उसे किसी ने आवाज लगायी, अरे! रमेश आज जो बड़े सरकार की दावत के लिए तेरी गाय उठा कर ले गये। वृद्ध रमेश पर तो मानों घड़ों पानी पड़ गया; आखिर यही दो गायें तो बची थीं उसके जीवन-यापन का सहारा, न सिर्फ उसका बल्कि अपनी एक विधवा बहू ओर दो मासूम पोते-पोतियों का पेट भी इन्हीं पशुओं की बदौलत पलता था। एक असहाय दुर्बल वृद्ध आदमी करता भी तो क्या सिवाय एकटक निहारने के। बूटों की खट-खट करता काले सूट-बूट पहना वह आदमी उसकी आँखों के सामने ही उसकी चम्पा (गाय) को घसीटता हुआ लेकर चला जा रहा था, और रमेश की वृद्ध आंखें इस दृश्य के ओझल होने तक खुली की खुली रहीं। अब तो उसका मित्र रामू भी इस दुनिया और उसकी दोस्ती को अलविदा कहकर जा चुका था। अब वह अपनी व्यथा कहता भी तो किससे? उस दुखियारी विधवा बहू से अगर यह अप्रिय बात साझा करे तो वह और गम में डूब जायेगी। उन मासूम बच्चों से जिन्हें स्कूल जाने की उम्र में लकड़ियाँ काटनी पड़ती हैं उनसे भी नहीं कह सकता था। अरे नहीं वही तो अपने घर का खेवनहार है वह खुद ही बता देगा की उसने चम्पा को किसी मित्र के यहाँ बांधी है, अब की फसल खराब होने से चारा-भूसा भी तो नहीं था गायों को खिलाने के लिए।

मंदिर की चौखट पर बैठा रमेश फिर से एक सुखद दिवा स्वप्न में खो जाता है और सोचने लगता है चलो! यह जन्म तो गुलामी में गुजर गया। लेकिन प्रभु अगला जन्म भी इसी भारतवर्ष में देना तब देखूँगा मैं स्वतंत्रता का सूरज! जाने कैसी होगी ये दुनिया - 75 वर्ष बाद ....!

❑ ❑ ❑

पिता

श्री पी. जे. तुरबाडकर
पर्यवेक्षक
शाखा कार्यालय, मुंबई

माँ रोती है, बाप नहीं रो सकता, खुद का पिता मर जाये फिर भी नहीं रो सकता, क्योंकि छोटे भाईयों को संभालना है। राम भले कौशल्या का पुत्र हो लेकिन उनके वियोग में तड़प कर जान देने वाले दशरथ थे। पिता की घिसी हुई चप्पल देखकर उनका प्रेम समझ में आता है, उनकी छिद्रों वाली बनियान देखकर हमें महसूस होता है कि हमारे हिस्से के भाग्य के छेद उन्होंने ले लिये हैं। लड़की को गाऊन ला देंगे, बेटे को ट्रैक सूट ला देंगे, लेकिन खुद पुरानी पैंट पहनते रहेंगे। बाप बीमार नहीं पड़ता, बीमार हो भी जाये तो तुरन्त अस्पताल नहीं जाते, डॉक्टर ने एकाध महीने का आराम बता दिया तो उसके माथे की सिलवटें गहरी हो जाती हैं, क्योंकि लड़की की शादी करनी है। किसी भी परीक्षा के परिणाम आने पर माँ हमें प्रिय लगती है, क्योंकि वह तारीफ करती है, पुचकारती है, हमारा गुणगान करती है, लेकिन चुपचाप जाकर मिठाई का पैकेट लाने वाला पिता अक्सर बैकग्राऊँड में चला जाता है।

❑ ❑ ❑

मन के हारे हार हैं - मन के जीते जीत

सुश्री सोनिका सोनी,
बहन, सुश्री मोनिका सोनी, डी.ई.ओ.

अधिकतर लोगों को कहते देखा गया है कि जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए। नकारात्मक विचारों को अपने मन-मस्तिष्क में नहीं आने देना चाहिए, आदि आदि।

''सकारात्मक दृष्टिकोण हमारे अंदर एक ऊर्जा का संचार करता है और यही ऊर्जा हमें सफलता की ओर ले जाती है।''

आखिर सकारात्मक दृष्टिकोण है क्या? यह स्वयं पर भरोसा रखने और जीवन को सकारात्मक पहलू देखने से शुरू होता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता हासिल करने, उसे महसूस करने और उस पर गर्व करने के लिए सकारात्मक सोच अति महत्वपूर्ण कारक है। तुम जैसा सोचते हो उसी से तय होता है कि तुम जीवन में कहाँ तक पहुंचोगे और यही सोच तुम्हारे कार्यों, व्यवसाय और व्यक्तिगत रिश्तों में परिलक्षित होती है। छात्र जीवन में पढ़ाई के दौरान और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियों में की गई कोशिशों के दौरान भी यही सोच सबसे बड़ी व महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सकारात्मक दृष्टिकोण दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं से आसानी से निपटने में सहायता प्रदान करता है। यह जीवन के प्रति आपके नजरिये को आशावान बनाता है और चिन्ताओं व नकारात्मक सोच को दूर करना आसान बनाता है।

अपने तय लक्ष्य को पाने के लिए, जीवन में अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए, एक विजेता का दृष्टिकोण रखना अति आवश्यक है। वे लोग, जिनकी महान सफलताओं के लिए हम खड़े होकर तालियाँ बजाते हैं और प्रशंसा करते हैं, एक नकारात्मक व निराशावादी दृष्टिकोण के साथ जीते हुये कभी भी अपने जीवन में वो सब हासिल नहीं कर पाते जिसके लिए वे जाने जाते हैं।

एक विजयी जीवन के लिए अपनी सफलता को देखने की दूरदृष्टि रखना और सही दृष्टिकोण के साथ जीना आवश्यक है।

इसके विपरीत, यदि तुम्हारा मष्तिष्क नकारात्मक चीजों से भरा पड़ा है तो तुम्हें जीवन बहुत जटिल प्रतीत होगी और जीवन के हर मोड़ पर समस्यायें तुम्हारा इंतजार करेंगी। यदि हमें स्वयं को अपनी जीत का भरोसा नहीं होगा तो मुश्किल है कि हम कभी जीत पायें। जीतने के लिए सबसे पहले जरूरी है जीत की आस रखना और स्वयं पर विश्वास रखना कि तुम जीत सकते हो। कहा भी गया है, 'मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीत।' यदि तुम्हारा दृष्टिकोण सकारात्मक है और तुम स्वयं से अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद रखते हो तो तुम बिना किसी डर, झिझक और परेशानी के जीत हासिल कर लोगे। स्वयं में विश्वास और अपनी कुशलता व क्षमता पर भरोसा सकारात्मकता के कारण कई गुना बढ़ जाता है। इससे तुम्हारे जीवन में आने वाले अवसर बेकार नहीं जाते और तुम उनका सही समय पर सही तरीके से इस्तेमाल करते हो और उन्हें परिणाम में बदल देते हो। इसके विपरीत, नकारात्मक नजरिये के साथ जीने वाले लोग हर काम में, हर चीज में कमी निकालने की बीमारी का शिकार बन जाते हैं। उन्हें जीवन में केवल समस्यायें दिखाई पड़ती हैं और वे जीवन में मिलने वाले अवसरों

को पहचान नहीं पाते। सकारात्मक दृष्टिकोण से असंभव कार्य को भी संभव बनाया जा सकता है। ऐसे दृष्टिकोण से आत्मविश्वास पैदा होता है और आत्मविश्वास ही वह कुंजी है जो असंभव को संभव में बदल देती है। 1903 में न्यूयॉर्क के एक जाने-माने इंजीनियर ने कहा था कि मानव के लिए उड़ना असंभव है। उसके ठीक दो सप्ताह बाद ही राइट बंधू अपनी पहली उड़ान का सफल प्रदर्शन कर रहे थे। क्या उन्होंने कोई जादू किया था? नहीं। उन्होंने केवल स्वयं को यह समझाया था कि यह कार्य संभव है और वे इस दृष्टिकोण के साथ कार्य कर रहे थे कि वे अपना लक्ष्य हासिल करने में सक्षम हैं।

यही है सकारात्मक दृष्टिकोण, तुम्हारी सफलता की कुंजी।

❑ ❑ ❑

कर्मों का फल

श्री अनिल कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
शाखा कार्यालय, मुंबई

एक बार एक राजा ने अपने राज्य के तीन व्यक्तियों को अपने दरबार में बुलाया और उनको अपने लिए मीठे और स्वादिष्ट फल लाने के लिए कहा। उन तीनों को बड़े बड़े तीन झोले दे दिये गए। तीनों व्यक्ति फलों की तलाश में अलग-अलग दिशाओं में बगीचों में गए। पहले व्यक्ति ने सोचा कि यदि मैं राजा के लिए सुंदर तथा मधुर फलों को लेकर जाऊंगा तो राजा खाकर मेरी प्रशंसा करेगा और मुझे इनाम देगा। यह सोचकर उसने अच्छे अच्छे फलों को तोड़ कर पूरा झोला भर लिया। दूसरे व्यक्ति ने सोचा कि राजा इतने फल थोड़े ही खाएगा, अतः उसने झोले में नीचे कच्चे तथा सड़े गले खराब फल तोड़ कर भर लिए तथा ऊपर सुंदर फलों से झोला भर लिया। तीसरा व्यक्ति बहुत आलसी था उसने सोचा कि इतने फल कौन तोड़ता रहेगा, राजा तो ऊपर से दो चार फल ही खाएगा, अतः उसने झोले में नीचे तो घास फूस भर लिया तथा ऊपर कुछ सुंदर स्वादिष्ट फल तोड़कर रख लिए। अब तीनों व्यक्ति अपने झोलों के साथ दरबार में उपस्थित हुये। राजा उनको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। राजा ने उनके झोलों को देखे बिना ही उन तीनों के लिए आदेश दिया कि उन तीनों को एक सप्ताह के लिए नगर से बाहर अलग अलग सुनसान जगह पर छोड़ दिया जाए और उनके द्वारा लाये गए फलों से उनको एक सप्ताह तक खाने के लिए काम चलाना है।

राजा की आज्ञा के अनुसार तीनों व्यक्तियों को नगर के बाहर सुनसान जगहों पर छोड़ दिया गया। पहले व्यक्ति ने जिसने अपना झोला अच्छे फलों से भरा था, फलों को खाकर आनंद से समय बिताने लगा। दूसरा व्यक्ति जिसने ऊपर अच्छे फल रखे थे दो तीन दिन ही खा सका फिर बाद में सड़े गले फलों को खाकर बीमार पड़ गया, तीसरा व्यक्ति जिसने सिर्फ ऊपर फल रखे थे बाकी घास फूस भरा था एक दो दिन ही फल खा सका और फिर बाकी समय भूख से तड़पकर मर गया।

एक सप्ताह बीतने पर राजा ने उन तीनों को अपने दरबार में बुलाया, परंतु दो ही व्यक्ति दरबार में उपस्थित हो सके क्योंकि एक व्यक्ति भूख से मर चुका था, दूसरा बीमार अवस्था में था तथा तीसरा व्यक्ति स्वस्थ अवस्था में उपस्थित था। तब राजा ने सभी दरबारियों के समक्ष कहा कि इन तीनों की ये अवस्था इनके कर्मों के कारण ही हुई हैं, जिसने जैसा कर्म किया उसको वैसा फल मिला। अतः सभी मनुष्यों को सदैव अच्छे कर्म करना चाहिए।

❑ ❑ ❑

सफल बनने के लिए स्वस्थ रहें ...

सुश्री मोनिका सोनी
डी.ई.ओ.

युवा अवस्था जीवन का एक सुंदर दौर होता है, एक बार गुजर जाये, तो वापस नहीं लौटता। दुनियाँ में हर मुश्किल वक्त में युवा शक्ति का आह्वान किया जाता है, चाहे मसला विकास का हो या विनाश को टालने का।

कैरियर को लेकर युवाओं के लिए आज का दौर प्रतियोगिताओं से भरा है। इस वजह से यह संघर्ष कई तरह का हो गया है। ऐसे संघर्ष के दौर में युवाओं की पहली प्राथमिकता स्वस्थ रहने की होनी चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि शरीर को सुदृढ़ करो और लक्ष्य प्राप्ति तक आगे बढ़ते रहो। स्वास्थ्य प्राप्ति एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जिसे आधुनिक सभ्यता दिन प्रतिदिन जटिलता प्रदान करती जा रही है। स्वस्थ रहते हुए ही युवा इन जटिलताओं से पार पा सकते हैं।

भारतीय आयुर्वेद के अनुसार- ''जीवेत शतायु'' जीवन का आधार है। कुछ अनुसंधानों में यह पाया गया है कि एक प्राणी जितने वर्षों में अपना कुल शारीरिक विकास प्राप्त करता है उसका जीवन उसका करीबन सात गुना होता है। एक औसत मनुष्य लगभग 18 वर्ष की आयु में पूर्ण रूप से विकसित होता है। यह समय व्यक्ति के कैरियर का भी अहम पड़ाव होता है। इस समय में यदि व्यक्ति शारीरिक के साथ मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होगा, तो वह अपने कैरियर को सही दिशा नहीं दे सकता है। विभिन्न सामाजिक अध्ययनों से यह निष्कर्ष भी प्राप्त हुआ है कि कुछ प्रजातियाँ जो कि शारीरिक श्रम पर आधारित हैं, उनमें आज के दौर के प्रचलित विभिन्न रोगों का पूर्णतया अभाव है ।

महात्मा गांधी ने 'श्रम सिद्धान्त' के अन्तर्गत यह शिक्षा दी थी कि प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक श्रम करके अपने उपयोग की वस्तुओं में योगदान देना चाहिए।

यही बात आज के युवाओं पर भी लागू होती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में 64 कलाओं में प्रवीणता को लक्ष्य बनाया जाता था, उनमें अनेक कलायें शारीरिक विकास पर आधारित थीं जैसे- तीरंदाजी, मलखंभ कबड्डी, घुड़सवारी, तलवारबाजी, नृत्य इत्यादि। वर्तमान समय में इसका स्वरूप कुछ परिवर्तित हो गया है। लेकिन युवाजन इन बदली हुई स्थितियों में भी खेलों में शामिल होकर अपनी शारीरिक क्षमता को मजबूत बना सकते हैं।

आजकल यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है कि युवाजन टेलीवीजन पर खेल को देखते तो बड़ी रोचकता से हैं, लेकिन स्वयं खेलते नहीं। यदि विभिन्न खेलों को जीवन का हिस्सा बनाया जाये तथा उचित आहार, विहार और व्यायाम को अपनाया जाये तो स्वस्थ युवाओं के साथ-साथ स्वस्थ समाज का निर्माण सहज ही संभव हो जायेगा।

❑ ❑ ❑

सर्दी आई

सुश्री चित्राली कटरे
सुपुत्री, श्री राजेश कुमार कटरे,
वरिष्ठ अनुवादक

सर्दी आई, सर्दी आई
देखो ये सर्दी आई।

बर्फीली ठण्डी हवा है
चलती
धरती हिम चादर सी लगती
अलसाई नदी मचल कर
बहती
धूप बगीचों का रूप
निखारती।

रजाई-कँबल, मुस्कान लिए सिगड़ी लाई
सर्दी आई, सर्दी आई देखो ये सर्दी आई।

पंक्षी चहकते डाली डाली
गाय-बैल करते मस्त जुगाली
भैंसे फिर भी जल में तैर रही हैं
शाम को बाजारों में भीड़ नहीं है।

हद ! ये ठिठुरन, हद! ये ठंडी रातें आई
सर्दी आई, सर्दी आई देखो ये सर्दी आई।

लाल टमाटर और बेर पीले पीले
कई सब्जियां हैं सर्दी में फल रसीले
अच्छी लगती अब तो धूप सुनहरी
सुबह-शाम ओस पौधों को नहलाती।

हर तरफ चाय दुकानों में रंगत आई
सर्दी आई, सर्दी आई देखो ये सर्दी आई।

सूरज मौन, धूप शर्माती, दिन हुए छोटे-छोटे
घास-फूंस हैं ओस की चादर ओढ़े-ओढ़े
भेड़-बकरियां खाती पत्ती कोमल-कोमल
सुबह-शाम कँपकपी और सिरहन।

जगह-जगह अलाव, अल्हड़ ऋतु आई
सर्दी आई, सर्दी आई देखो ये सर्दी आई।

❑❑❑

हिन्दी भाषा वर्ग-पहेली का हल

1. दे	व	2. भा	षा				3. म		4. कों
व		षा			5. कि		ल		क
6. ना	गा		7. नि		रा		या		णी
ग			षा		8. त	मि	ल		
री		9. चौ	द	ह			10. म	रा	ठी
	11. फ्रां								
12. अ	स	13. म		14. क				15. ना	
		हा		न्न		16. ते	लं	गा	ना
17. उ	त्त	रा	खं	ड		लु		लैं	
दू		ष्ट्र				गू		ड	

हिंदी गृह पत्रिका रश्मि के 33 वें अंक के विमोचन समारोह की झलकियाँ

रश्मि के 33 वें अंक का विमोचन महालेखाकार महोदय द्वारा राजभाषा अधिकारी तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण की उपस्थिति में महालेखाकार महोदय के कक्ष में दिनांक – 23-12-2021 को किया गया ।

पत्रिका का ई–संस्करण कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपुर की कार्यालयीन वेबसाइट www.cag.gov.in/ag/nagpur/en पर निम्न पाथ (path) पर पढ़ने हेतु उपलब्ध है : कार्य–प्रशासन–राजभाषा–हिंदी पत्रिका रश्मि (Function-Administration-Rajbhasha-Hindi Magazine Rashmi).

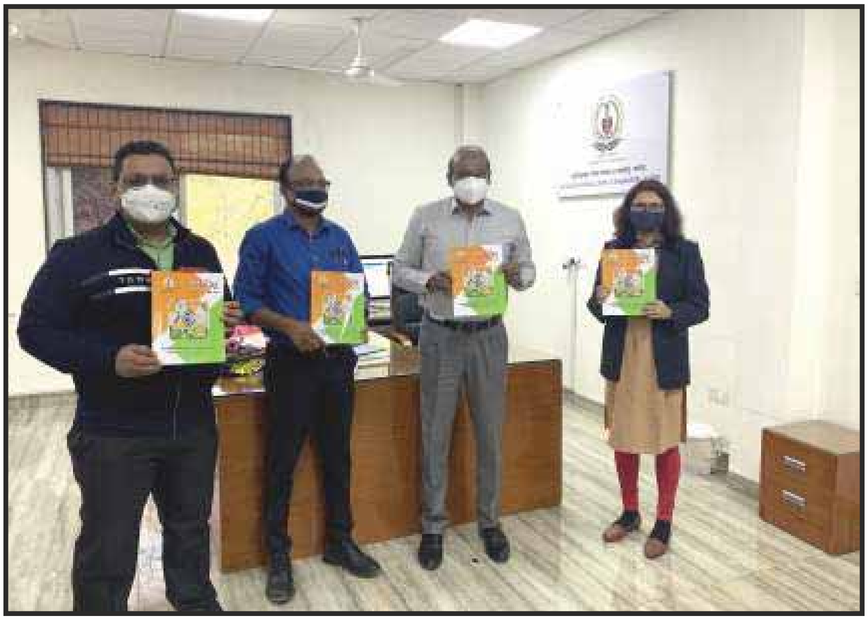

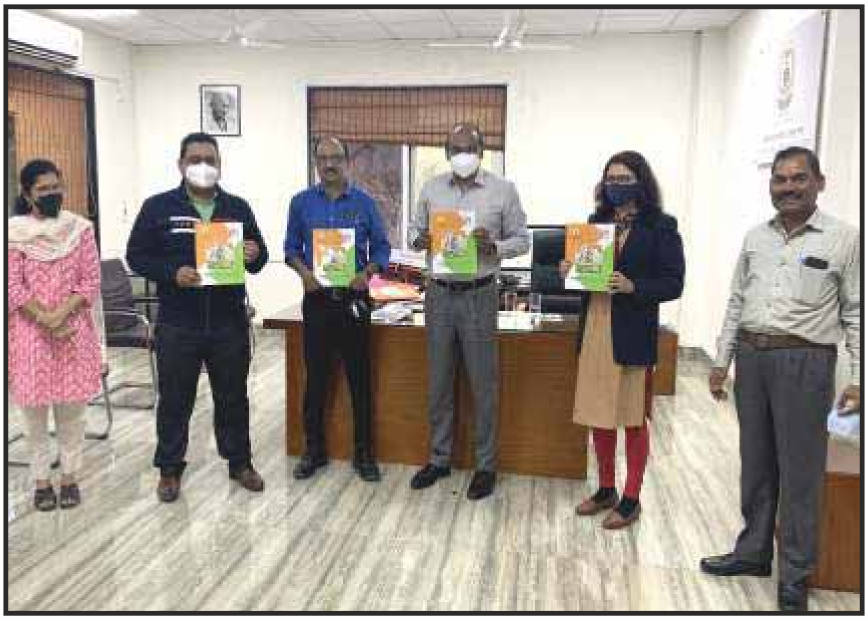

नराकास पुरस्कार वितरण समारोह वर्ष 2022

(i) वर्ष 2020-21 के राजभाषा पत्रिकाओं की गृह पत्रिका श्रेणी में कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका ''रश्मि'' को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

(ii) वर्ष 2021-22 में नराकास के सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपुर के दो कार्मिकों ने निम्नलिखित पुरस्कार प्राप्त किए :

क्र. सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम	प्रतियोगिता का नाम	नराकास द्वारा घोषित पुरस्कार
1.	कु. मोनिका सोनी, डी.ई.ओ.	एकाक्षरी चिंतन	प्रथम
2.	श्री मुकुल अनसिंगकर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	अनुवाद	द्वितीय

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुचारू रूप से जारी है।

राजभाषा विभाग के निदेशानुसार वर्ष 2021-22 तथा वर्ष 2022-23 की विगत तिमाहियों की प्रगति रिपोर्टों को ऑनलाइन प्रेषित किया गया। विभिन्न अनुभागों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की गई तथा संबंधित अनुभागों को अपेक्षित सुधार करने को कहा गया।

जनवरी-मार्च, 2022 की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में दिनांक- 27.06.2022 को एम. एस. टीम्स ऐप के माध्यम से आयोजित की गई।राजभाषा की प्रगति से संबंधित सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई तथा कार्यालय में राजभाषा का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने पर बल दिया गया। हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु समूह 10 मुख्यालय-। तथा एफ.ए.डब्लू.-। अनुभाग को महालेखाकार चल शील्ड प्रदान किया गया।

अप्रैल-जून, 2022 की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में दिनांक - 11.08.2022 को एम. एस. टीम्स ऐप के माध्यम से आयोजित की गई। राजभाषा की प्रगति से संबंधित सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई तथा कार्यालय में राजभाषा का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने पर बल दिया गया। हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु आई.टी. तथा वित्त मुख्यालय-।। अनुभाग को महालेखाकार चल शील्ड प्रदान किया गया।

हिंदी कार्यशाला

कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन को सरल एवं सहज बनाने हेतु हिंदी अनुभाग द्वारा प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इसमें अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। जनवरी–मार्च, 2022 की कार्यशाला दिनांक 03.03.2022 एवं 04.03.2022, अप्रैल–जून, 2022 की कार्यशाला दिनांक 15.06.2022 एवं 16.06.2022 तथा जुलाई–सितंबर, 2022 की कार्यशाला दिनांक 01.09.2022 एवं 02.09.2022 को आयोजित की गई।

लेखापरीक्षा के पन्नों से

नहर की डिजाइन/संशोधित डिजाइन प्रक्रिया के संबंध में दिशा–निर्देशों का पालन न करने के कारण ₹ 102.12 लाख का परिहार्य अतिरिक्त भुगतान

फरवरी 1995 में सिंचाई विभाग, महाराष्ट्र सरकार ने मौजूदा दिशानिर्देशों के अधिक्रमण में, नहरों के डिजाइन और संशोधित डिजाइन प्रक्रियाओं के लिए संशोधित दिशानिर्देश जारी किए । नरम मिट्टी में नहरों के लिए, नहर के भीतरी किनारे की ढलानों के अनुपात की अनुशंसा 1.5:1 की गयी थी, ताकि पूरे नहर में पानी का समुचित बहाव हो सके।

जून 2017 में धुले मीडियम प्रोजेक्ट मंडल के अभिलेखों की जांच से पता चला कि अगस्त 2011 में लोअर पंजारा (अक्कलपाड़ा) मीडियम प्रोजेक्ट की बायीं तट के नहर का कार्य, वर्ष 2009-10 के लिए दरों की अनुसूची के अनुसार अनुमानित लागत, ₹ 33.09 करोड़ से 10.80 प्रतिशत अधिक अर्थात ₹ 36.67 करोड़ में एक ठेकेदार को आबंटित किया गया था। जुलाई 2013 में कार्य आदेश जारी होने से 24 माह के भीतर कार्य पूर्ण करना निर्धारित किया गया था।

यह देखा गया कि एस्टीमेट्स में, नहर के भीतरी किनारे के ढलान, परिकल्पित अनुपात, 1.5:1 के बजाय 0.5:1 के अनुपात में थे। इससे निपटने के लिए, तापी ईरीगेशन डेवेलपमेंट कॉरपोरेशन (टीआईडीसी) ने जनवरी 2012 में भीतरी किनारे की ढलान को 1.5:1 के अनुपात में परिवर्तित करने की मंजूरी दी। तदनुसार, नियंत्रित ब्लास्टिंग द्वारा नरम स्तर, कठोर स्तर और हार्ड रॉक में उत्खनन में काफी वृद्धि हुई, जिसे 2012 से जून 2015 के दौरान निष्पादित किया गया। जुलाई 2015 में अनुबंध के खंड 38 के तहत, सिंचाई परियोजना मंडल, धुले ने निविदा मात्रा के 125 प्रतिशत से अधिक मात्रा के लिए संशोधित दरों को मंजूरी दी । मंडल ने मई 2016 में ठेकेदार को 16 वें एवं अंतिम बिल द्वारा ₹ 62.81 करोड़ का भुगतान, भुगतान को खण्ड–38 के अन्तर्गत शामिल करके किया।

फरवरी 1995 में एस्टीमेट्स तैयार करते समय दिशा–निर्देशों का पालन न करने के परिणामस्वरूप, नियंत्रित ब्लास्टिंग द्वारा नरम स्तर, कठोर स्तर और हार्ड रॉक में उत्खनन की मात्रा में भारी वृद्धि और खंड –38 के तहत ₹102.12 लाख का परिहार्य अतिरिक्त भुगतान हुआ ।

लेखापरीक्षा में इंगित किये जाने पर, जून 2017 में मंडल ने बताया कि एस्टीमेट्स तैयार करते समय कुछ परिसीमन (लिमीटेसन) थे, जैसे परियोजना की लागत प्रति हेक्टेयर लिए जाना तथा निष्पादन के दौरान, कुछ हिडेन आइटम बढ़ा दिए गए थे।

यह उत्तर स्वीकार्य नहीं है क्योंकि नहर के भीतरी किनारे की ढलान के अनुपात को 1.5:1 रखने के दिशानिर्देश फरवरी 1995 में जारी किए गए थे और वर्तमान कार्य के एस्टीमेट्स, वर्ष 2008-09 में तैयार किए गए थे। एस्टीमेसन के समय दिशा–निर्देशों का पालन न करने के कारण भारी मात्रा में उत्खनन तथा अनुबंध के खंड 38 के तहत भुगतान हुआ।

अगस्त 2019 में मामला सरकार को भेजा गया; जून 2020 में उत्तर प्रतीक्षित था।

योगदानकर्ता: श्री एम.एस. मन्नी, व.ले.प.अ.

राजभाषा अधिनियम, 1963
(यथासंशोधित, 1967)
(1963 का अधिनियम संख्यांक 19)

उन भाषाओं का, जो संघ के राजकीय प्रयोजनों, संसद में कार्य के संव्यवहार, केन्द्रीय और राज्य अधिनियमों और उच्च न्यायालयों में कतिपय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाई जा सकेंगी उपबन्ध करने के लिए अधिनियम। भारत गणराज्य के चौदहवें वर्ष में संसद द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ

    1. यह अधिनियम राजभाषा अधिनियम, 1963 कहा जा सकेगा।

    2. धारा 3, जनवरी 1965 के 26 वें दिन को प्रवृत्त होगी और इस अधिनियम के शेष उपबन्ध उस तारीख को प्रवृत्त होंगे जिसे केन्द्रीय सरकार शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियत करे और इस अधिनियम के विभिन्न उपबन्धों के लिए विभिन्न तारीखें नियत की जा सकेंगी।

2. परिभाषाएं इस अधिनियम में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,

    a. नियत दिन से, धारा 3 के सम्बन्ध में जनवरी, 1965 का 26 वां दिन अभिप्रेत है और इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंध के सम्बन्ध में वह दिन अभिप्रेत है जिस दिन को वह उपबन्ध प्रवृत्त होता है।

    b. हिन्दी से वह हिन्दी अभिप्रेत है जिसकी लिपि देवनागरी है।

3. संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा का रहना

    1. संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि की समाप्ति हो जाने पर भी, हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा, नियत दिन से ही,

    a. संघ के उन सब प्रयोजनों के लिए जिनके लिए वह उस दिन से ठीक पहले प्रयोग में लाई जाती थी तथा

    b. संसद में कार्य के संव्यवहार के लिए प्रयोग में लाई जाती रह सकेगी:

परंतु संघ और किसी ऐसे राज्य के बीच, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग में लाई जाएगी:

परन्तु यह और कि जहां किसी ऐसे राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है और किसी अन्य राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, बीच पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाया जाता है, वहां हिन्दी में ऐसे पत्रादि के साथ-साथ उसका अनुवाद अंग्रेजी भाषा में भेजा जाएगा:

परन्तु यह और भी कि इस उपधारा की किसी भी बात का यह अर्थ नहीं लगाया जाएगा कि वह किसी ऐसे राज्य को, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संघ के साथ या किसी ऐसे राज्य के साथ, जिसने हिन्दी

को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है, या किसी अन्य राज्य के साथ उसकी सहमति से, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाने से निवारित करती है, और ऐसे किसी मामले में उस राज्य के साथ पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बाध्यकर न होगा।

2. उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी या अंग्रेजी भाषा

i. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और दूसरे मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के बीच

ii. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के बीच

iii. केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के और किसी अन्य ऐसे निगम या कम्पनी या कार्यालय के बीच प्रयोग में लाई जाती है वहां उस तारीख तक, जब तक पूर्वोक्त संबंधित मंत्रालय, विभाग, कार्यालय या विभाग या कम्पनी का कर्मचारीवृंद हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता, ऐसे पत्रादि का अनुवाद, यथास्थिति, अंग्रेजी भाषा या हिन्दी में भी दिया जाएगा।

3. उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही–

i. संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किए जाते हैं,

ii. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज–पत्रों के लिए,

iii. केन्द्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा–प्ररुपों के लिए प्रयोग में लाई जाएगी।

4. उपधारा (1) या उपधारा (2) या उपधारा (3) के उपबन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना यह है कि केन्द्रीय सरकार धारा 8 के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा उस भाषा या उन भाषाओं का उपबन्ध कर सकेगी जिसे या जिन्हें संघ के राजकीय प्रयोजन के लिए, जिसके अन्तर्गत किसी मंत्रालय, विभाग, अनुभाग या कार्यालय का कार्यकरण है, प्रयोग में लाया जाना है और ऐसे नियम बनाने में राजकीय कार्य के शीघ्रता और दक्षता के साथ निपटारे का तथा जन साधारण के हितों का सम्यक ध्यान रखा जाएगा और इस प्रकार बनाए गए नियम विशिष्टतया यह सुनिश्चित करेंगे कि जो व्यक्ति संघ के कार्यकलाप के सम्बन्ध में सेवा कर रहे हैं और जो या तो हिन्दी में या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण है वे प्रभावी रूप से अपना काम कर सकें और यह भी कि केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं है उनका कोई अहित नहीं होता है।

5. उपधारा (1) के खंड (क) के उपबन्ध और उपधारा (2), उपधारा (3) और उपधारा (4) के उपबन्ध तब तक प्रवृत्त बने रहेंगे जब तक उनमें वर्णित प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए ऐसे सभी राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा, जिन्होंने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संकल्प पारित नहीं कर दिए जाते और जब तक पूर्वोक्त संकल्पों पर विचार कर लेने के पश्चात ऐसी समाप्ति के लिए संसद के हर एक सदन द्वारा संकल्प पारित नहीं कर दिया जाता।

4. राजभाषा के सम्बन्ध में समिति –

1. जिस तारीख को धारा 3 प्रवृत्त होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात, राजभाषा के सम्बन्ध में एक समिति, इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर गठित की जाएगी।

2. इस समिति में तीस सदस्य होंगे जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे तथा दस राज्य सभा के सदस्य होंगे, जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों तथा राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

3. इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करें और उस पर सिफारिश करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करें ओर राष्ट्रपति उस प्रतिवेदन को संसद के हर एक सदन के समक्ष रखवाएगा और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएगा।

4. राष्ट्रपति उपधारा (3) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर और उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किए हों तो उन पर विचार करने के पश्चात उस समस्त प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेगा।

परन्तु इस प्रकार निकाले गए निदेश धारा 3 के उपबन्धों से असंगत नहीं होंगे।

5. केन्द्रीय अधिनियमों आदि का प्राधिकृत हिन्दी अनुवाद –

1. नियत दिन को और उसके पश्चात शासकीय राजपत्र में राष्ट्रपति के प्राधिकार से प्रकाशित –

    a. किसी केन्द्रीय अधिनियम का या राष्ट्रपति द्वारा प्रख्यापित किसी अध्यादेश का, अथवा

    b. संविधान के अधीन या किसी केन्द्रीय अधिनियम के अधीन निकाले गए किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि का हिन्दी में अनुवाद उसका हिन्दी में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

2. नियत दिन से ही उन सब विधेयकों के, जो संसद के किसी भी सदन में पुरःस्थापित किए जाने हों और उन सब संशोधनों के, जो उनके संबंध में संसद के किसी भी सदन में प्रस्तावित किए जाने हों, अंग्रेजी भाषा के प्राधिकृत पाठ के साथ–साथ उनका हिन्दी में अनुवाद भी होगा जो ऐसी रीति से प्राधिकृत किया जाएगा, जो इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा विहित की जाए।

6. कतिपय दशाओं में राज्य अधिनियमों का प्राधिकृत हिन्दी अनुवाद –

जहाँ किसी राज्य के विधानमण्डल ने उस राज्य के विधानमण्डल द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में प्रयोग के लिए हिन्दी से भिन्न कोई भाषा चिन्हित की है वहां, संविधान के अनुच्छेद 348 के खण्ड (3) द्वारा अपेक्षित अंग्रेजी भाषा में उसके अनुवाद के अतिरिक्त, उसका हिन्दी में अनुवाद उस राज्य के शासकीय राजपत्र में, उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से नियत दिन को या उसके पश्चात प्रकाशित किया जा सकेगा और ऐसी दशा में ऐसे किसी अधिनियम या अध्यादेश का हिन्दी में अनुवाद हिन्दी भाषा में उसका प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

7. उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदि में हिन्दी या अन्य राजभाषा का वैकल्पिक प्रयोग –

नियत दिन से ही या तत्पश्चात् किसी भी दिन से किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सम्मति से, अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी या उस राज्य की राजभाषा का प्रयोग, उस राज्य के उच्च न्यायालय द्वारा पारित या दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश के प्रयोजनों के लिए प्राधिकृत कर सकेगा और जहाँ कोई निर्णय, डिक्री या आदेश (अंग्रेजी भाषा से भिन्न) ऐसी किसी भाषा में पारित किया या दिया जाता है वहां उसके साथ–साथ उच्च न्यायालय के प्राधिकार से निकाला गया अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद भी होगा।

8. नियम बनाने की शक्ति –

1. केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा बना सकेगी।

2. इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र, में हो कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी। यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रुप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् यह निस्प्रभाव हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निस्प्रभाव होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

❑ ❑ ❑

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रुप में खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाईट द्विभाषी हो	100%	100%	100%

12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठके			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/ बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहाँ संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	40%	30% (न्यूनतम अनुभाग)	20%

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहाँ अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, 'क' क्षेत्र में कुल कार्य का 40% 'ख' क्षेत्र में 25% और 'ग' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

◆ ◆ ◆

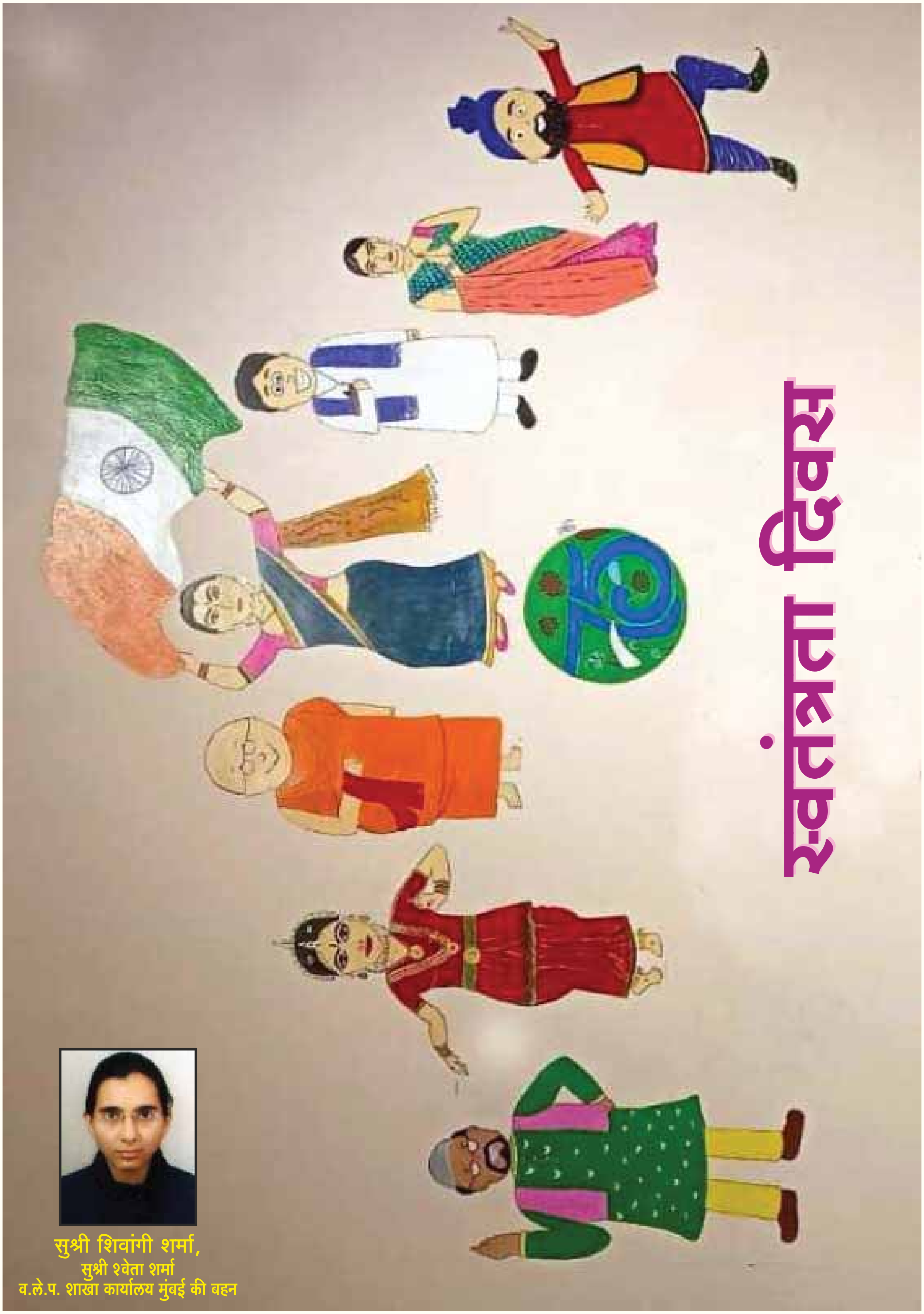

सुश्री शिवांगी शर्मा,
सुश्री श्वेता शर्मा
व.ले.प. शाखा कार्यालय मुंबई की बहन